



SHRI KHANDELWAL VAISHY HITKARINI SABHA

श्री खण्डेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा

**EDUCATIONAL VISION
DOCUMENT**

(As per New Educational Policy)

(2024 - 27)





SHRI KHANDELWAL VAISHY BALIKA SR. SEC. SCHOOL
 English/Hindi Medium-Nursery To XII
 (Co-Educational - Nursery To V) Recognition By RBSE

Rajendra Kumar Dhamani	Dinesh Kumar	Govind Gupta	Ghanshyam Das Badi
President	Treasurer	Joint Secretary	Secretary
9314877797	9414785	9095866	9862337814
Member - Anil K			Shureeta, Anju Tambi, Ashok Kumar C

श्री खण्डेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा

श्री खण्डेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा जयपुर के खण्डेलवाल समुदाय के कल्याण और विकास के लिए समर्पित एक प्रमुख संगठन है, जो जाति, धर्म, लिंग, और धार्मिक भेदभाव से ऊपर उठकर काम करता है। सामाजिक सेवा के प्रति अपनी गहरी प्रतिबद्धता के साथ, सभा विविध पहलों के माध्यम से समुदाय के अंदर एकता और प्रगति की भावना को मजबूत करने के लिए काम करती है। इसकी गतिविधियां जरूरतमंदों को आवश्यक सेवाएं जैसे भोजन, वस्त्र, आवास, और चिकित्सा सहायता प्रदान करने से लेकर, सांस्कृतिक और धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देने तक विस्तृत हैं, जिसमें सांस्कृतिक केंद्रों, पुस्तकालयों, और पूजा स्थलों की स्थापना शामिल है।

सभा का मूल उद्देश्य समुदाय का समग्र विकास है, जिसमें आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, और नैतिक कल्याण को बढ़ाने के प्रयास शामिल हैं। संगठन समाज में सामाजिक बुराइयों को दूर करने और अच्छे आचरणों को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे समाज के समग्र उत्थान और समृद्धि में योगदान होता है। व्यावसायिक केंद्रों, रोजगार कार्यशालाओं, और आवास सुविधाओं की स्थापना के माध्यम से, सभा सक्रिय रूप से जरूरतमंदों का समर्थन करती है, उनके समाज के मुख्यधारा में एकीकरण को सुनिश्चित करती है।

शिक्षा सभा के उद्देश्यों में विशेष स्थान रखती है, जिसमें सभी के लिए उच्च गुणवत्ता और सुलभ शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य है। सभा के शैक्षणिक संस्थान, स्कूलों से लेकर स्नातकोत्तर महाविद्यालयों तक, वैज्ञानिक, साहित्यिक, और तकनीकी शिक्षा प्रदान करने के लिए तैयार किए गए हैं, जो छात्रों को सर्वांगीण व्यक्तियों के रूप में विकसित करने में मदद करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, ये संस्थान एक अनुकूली, सहयोगात्मक और तकनीकी रूप से उन्नत सीखने के वातावरण को बनाने का लक्ष्य रखते हैं। यह शैक्षिक दृष्टिकोण छात्रों को केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ ही नहीं, बल्कि मूल्यों, कौशल, और सहानुभूति के साथ सशक्त बनाने के लिए तैयार है, ताकि वे समाज और विश्व के लिए सार्थक योगदान दे सकें।



ज्ञानचंद खण्डेलवाल
अध्यक्ष

अध्यक्ष का संदेश

प्रिय सम्मानित सदस्यगण, शिक्षकगण, विद्यार्थीगण और शुभचिंतकगण,

श्री खण्डेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा के सभापति के रूप में, मैं आप सभी से संवाद करते हुए अत्यंत गर्व और गहन जिम्मेदारी की भावना महसूस कर रहा हूँ। हमारी सभा लंबे समय से खण्डेलवाल समाज के लिए समर्थन, शिक्षा और समुदाय कल्याण का एक स्तंभ रही है, जो एकता, सेवा और प्रगति के सिद्धांतों का प्रतीक है। वर्तमान समय की चुनौतियों और अवसरों को स्वीकार करते हुए, हमारी इन आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता अटल है।

हमारा शैक्षिक दृष्टिकोण पत्र शिक्षा और समग्र विकास की दिशा में हमारी यात्रा के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 से प्रेरित, यह दृष्टिकोण हमारी छात्रों को न केवल शैक्षणिक रूप से उत्कृष्ट बनाने के लिए, बल्कि सामाजिक रूप से जागरूक, नैतिक रूप से दृढ़ और वैश्विक स्तर पर सचेत नागरिकों के रूप में तैयार करने के हमारे समर्पण का प्रतीक है।

मैं हमारे समुदाय के सभी सदस्यों, शिक्षकों, और विद्यार्थियों के अटूट समर्थन और समर्पण के लिए हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। आइए, हम मिलकर शिक्षा और सेवा की हमारी विरासत को आगे बढ़ाएं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक समृद्ध भविष्य का निर्माण करें।

सादर,

ज्ञानचंद खण्डेलवाल

अध्यक्ष, श्री खण्डेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा



अजय कुमार गुप्ता
महासचिव

महासचिव का संदेश

प्रिय समुदाय के सदस्यों, शिक्षकगण, और प्रिय विद्यार्थियों,

श्री खण्डेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा के प्रधान सचिव के रूप में आपसे संवाद करना मेरे लिए एक सम्मान की बात है। हमारा शैक्षिक दृष्टिकोण पत्र हमारे सामूहिक लक्ष्यों, मूल्यों और हमारे समुदाय के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने की प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है।

शिक्षा हमारी समाज में व्यक्तिगत और सामूहिक प्रगति का आधार है। इसे पहचानते हुए, हमने एक ऐसी शैक्षिक रूपरेखा विकसित की है जो गतिशील, समावेशी और आधुनिक दुनिया की आवश्यकताओं के अनुरूप है। हमारा लक्ष्य ऐसे शिक्षण वातावरण बनाना है जो महत्वपूर्ण सोच, सृजनात्मकता, और नवाचार को प्रोत्साहित करे, जो हमारे समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और मूल्यों पर आधारित हो।

मैं हमारे शिक्षकों, अभिभावकों, और समुदाय के सदस्यों के निरंतर समर्थन और सहयोग के लिए गहरा आभार व्यक्त करता हूँ। आपकी प्रतिबद्धता हमारे मिशन को प्रेरित करती है और हमें नई ऊंचाइयों तक पहुँचने के लिए प्रेरित करती है। आइए हम साझा दृष्टि और उद्देश्य के साथ मिलकर काम करें, ताकि हम एक उज्वल, अधिक समावेशी भविष्य की राह बना सकें।

शुभकामनाओं के साथ,

अजय कुमार गुप्ता

महासचिव, श्री खण्डेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा

विषयसूची

परिचय	2
विज़न	2
मिशन.....	2
नई शिक्षा नीति (New Education Policy) की कुछ मुख्य बातें:.....	3
शिक्षा संरचना का डिज़ाइन:.....	3
कोर (Core) कौशल:.....	3
क्रिटिकल थिंकिंग:.....	3
कक्षा में शामिल हो सकते हैं:.....	4
रचनात्मक सोच:.....	5
शैक्षणिक समिति:.....	6
छात्रों की आवश्यकताओं की सूचना:.....	6
प्रभावी अनुशासन नीतियां:.....	6
एक सहयोगी सांस्कृतिक निर्माण:.....	7
शैक्षणिक उत्कृष्टता:.....	7
व्यक्तिगत शिक्षा:.....	8
सुरक्षा और स्वास्थ्य:.....	8
व्यावसायिक विकास:.....	8
सहयोगी सांस्कृतिक निर्माण:.....	9
शिक्षण कौशल में सुधार पर ध्यान केंद्रित करना	10
शिक्षण कौशलों में सुधार:.....	10
करियर मार्गदर्शन	12
शिक्षा में सहानुभूति शिक्षा, छात्र मानसिक स्वास्थ्य.....	14
शिक्षा में सहानुभूति को शामिल करें:.....	14
शिक्षा में सहानुभूति का महत्व:.....	15
संस्थान में सहानुभूति को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियां:.....	16
विद्यार्थियों को कल के कार्यबल के लिए तैयार करें	17
कक्षा से परे सीखना.....	19
व्यवहार प्रबंधन रणनीतियों में माता-पिता को शामिल करें.....	21

परिचय

शैक्षिक दृष्टिकोण पत्र श्री खण्डेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा के अधीन विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के भविष्य के विकास के लिए एक रणनीतिक ढांचा के रूप में कार्य करता है। यह दस्तावेज़ हमारे रणनीतिक इरादों को समेटे हुए है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के परिवर्तनकारी सिद्धांतों के साथ तालमेल बिठाने के लिए समर्पित है, यह सुनिश्चित करते हुए कि हमारी शैक्षिक प्रथाएं अनुकूलनीय, समावेशी हैं और 21वीं सदी की चुनौतियों और अवसरों का सामना करने के लिए सुसज्जित हैं। इस दस्तावेज़ में हमारे प्रतिष्ठित संस्थानों के सभी स्तरों पर, प्राथमिक से लेकर स्नातकोत्तर अध्ययनों तक, शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए विस्तृत रणनीतियों और पहलों का वर्णन किया गया है। यह दस्तावेज़ हमारे सामूहिक प्रयासों के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में कार्य करता है, जो सभा की देखरेख में हर छात्र की क्षमता को पोषित करने के हमारे संकल्प को दर्शाता है। यह हमारी उस प्रतिबद्धता का घोषणापत्र है जो न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए अनुकूल परिस्थितियों और वातावरण का निर्माण करता है, बल्कि हमारे छात्रों के व्यक्तिगत विकास और विकास के लिए भी है, उन्हें आधुनिक दुनिया की जटिलताओं का सामना करने के लिए आत्मविश्वास और ईमानदारी से तैयार करता है।

विज़न

श्री खण्डेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा यह सुनिश्चित करने का प्रयास करेगी कि खण्डेलवाल समाज के अंतर्गत विभिन्न शैक्षणिक संस्थान श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थानों का निर्माण करें जो छात्रों को नवाचार, अनुकूलन और सीखने को अधिक सुलभ, डिजिटल और सहयोगात्मक अनुभव के रूप में पुनः सेट करके ज्ञान और कौशल सीखने में मदद करते हैं, जिससे वे स्वरोजगार के लिए पूरी तरह से सुसज्जित या नौकरी के लिए तैयार पेशेवर बन सकें।

मिशन

श्री खण्डेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा को अपने विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में नामांकित छात्रों के लिए एक पोषण और समृद्ध वातावरण प्रदान करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। समग्र नीतियों का निर्माण और कार्यान्वयन इस कार्य का एक मौलिक पहलू है। ये नीतियां, जो अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति कार्यान्वयन के साथ संरेखित की गई हैं, शैक्षणिक, अनुशासन, सुरक्षा, और व्यक्तिगत विकास सहित समग्र शैक्षणिक अनुभव की नींव रखती हैं। ऐसी नीतियां तैयार करते समय, इस प्रक्रिया में शिक्षकों की अपरिहार्य भूमिका को पहचानना और उसका उपयोग करना महत्वपूर्ण है।

नई शिक्षा नीति (New Education Policy) की कुछ मुख्य बातें:

शिक्षा संरचना का डिज़ाइन:

वर्तमान 10+2 स्कूल संरचना को एक 5+3+3+4 पैटर्न से बदला जाएगा ताकि छात्रों पर परीक्षाओं का बोझ कम हो। यह 5+3+3+4 संरचना 3 से 8 वर्ष, 8 से 11 वर्ष, 11 से 14 वर्ष, और 14 से 18 वर्ष के लिए है। इस संरचना में 12 वर्षों की शिक्षा, 3 वर्षों का आंगनवाड़ी और पूर्व-प्राथमिक शिक्षा शामिल है। छात्रों को बागवानी, कारपेंट्री, पॉटरी, पेंटिंग आदि में भी प्रशिक्षित किया जाता है। उन्हें उनकी रूचियों की खोज करने और व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए 6 से 8 वर्ष के दौरान व्यावसायिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इसका उद्देश्य छात्रों के लिए संपूर्ण विकास के साथ संरचना को पुनः डिज़ाइन करना है। नई शिक्षा नीति 2020 कंप्यूटर और कोडिंग कक्षाएं भी प्रस्तुत करती है, जो शिक्षा प्रक्रिया को सुधारने की दिशा में एक सकारात्मक कदम होगा।

कोर (Core) कौशल:

शिक्षा मंत्रालय को मौलिक साक्षरता और गणना के राष्ट्रीय मिशन की सृष्टि करनी चाहिए। NCERT द्वारा एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्रीय ढांचा दिन-चर्चा और पूर्व-बाल्यकाल शिक्षा के लिए बनाया जाएगा ताकि यह सभी छात्रों तक तिसरे ग्रेड तक पहुंच सके। इस कार्रवाई को 2025 तक पूरा करने का योजना बनाई गई है।

क्रिटिकल थिंकिंग:

बोर्ड परीक्षा मुख्यतः छात्रों की याददाश्त और रटने क्षमता का परीक्षण करती है। नई शिक्षा नीति 2020 छात्रों की क्रिटिकल थिंकिंग, तर्कशीलता, और रचनात्मकता का परीक्षण करने का प्रस्ताव करती है, उनके ज्ञान के प्रायोगिक अनुप्रयोग के साथ। परीक्षण का पैटर्न ऐसा है जो सत्यापन और तथ्यात्मक ज्ञान की ओर मुख्य रूप से है।

a. समग्र विकास पर जोर:

नई शिक्षा नीति समग्र विकास के महत्व को जोर देती है, इसे मानते हुए कि शिक्षा अकेडेमिक प्राप्ति से आगे बढ़ती है। इससे रचनात्मक क्षमताओं को बढ़ावा मिलता है, क्योंकि यह शिक्षावादियों को एक छात्र के समृद्धि की समग्र दृष्टि को ध्यान में रखने के लिए प्रेरित करता है।

b. पाठ्यक्रम में लचीलापन:

नई शिक्षा नीति पाठ्यक्रम में लचीलापन को बढ़ावा देती है, स्कूलों को नवाचारी और रचनात्मक शिक्षा विधियों को अपनाने की अनुमति देती है। यह लचीलाता है शिक्षावादियों को अपने छात्रों की

आवश्यकताओं और रुचियों के अनुसार अपने दृष्टिकोण को बनाए रखने का एक अवसर प्रदान करने के लिए।

c. मूल्यांकन में सुधार:

नई शिक्षा नीति मूल्यांकन विधियों में परिवर्तन की सिफारिश करती है, जो केवल परीक्षाओं पर ही ध्यान केंद्रित नहीं है। इससे विभिन्न मूल्यांकन उपकरणों को शामिल करने का एक अवसर मिलता है जो रचनात्मक सोच, समस्या-समाधान क्षमताओं, और ज्ञान के प्रायोगिक अनुप्रयोगों को मान्यता और मूल्यांकन करते हैं।

d. बहुभाषावाद की प्रोत्साहन:

नई शिक्षा नीति बहुभाषावाद के महत्व को स्वीकार करती है और शिशु शिक्षा में मातृभाषा का उपयोग करने की प्रोत्साहना करती है। यह दृष्टिकोण छात्रों को अपनी मातृभाषा में सुखद रूप से और रचनात्मक रूप से अपने आत्मव्यक्ति करने की अनुमति देने के द्वारा रचनात्मकता को बढ़ा सकता है।

कक्षा में शामिल हो सकते हैं:

- परियोजना-आधारित शिक्षा (PBL): छात्रों को हाथों से, सहयोगी परियोजनाओं में लाने के लिए जो कि कृतिक सोच और समस्या-समाधान क्षमताओं की आवश्यकता होती है।
- पूछताछ-आधारित शिक्षा: छात्रों को प्रश्न पूछने, स्वतंत्र अनुसंधान करने, और मानक पाठ्यक्रम से परे विषयों की खोज करने के लिए प्रेरित करना।
- कला समक्रमण: आभास कराने के लिए कि रचनात्मकता को उत्तेजित करने के लिए ड्रॉइंग, पेंटिंग, संगीत, नाटक, और नृत्य जैसी गतिविधियों को शामिल करें।
- तकनीक का समक्रमण: डिजिटल स्रोतों, आभासी सहयोग प्लेटफॉर्म, मल्टीमीडिया प्रस्तुतियों, और कोडिंग अभ्यासों का उपयोग करना जोड़कर गतिविधि और रचनात्मक सोच को बढ़ावा देने के लिए।
- लचीले असाइनमेंट्स: छात्रों को परियोजना विषय, प्रारूप, या विधियों का चयन करने की अनुमति देना, स्वतंत्रता प्रदान करना और रचनात्मकता को बढ़ावा देना।
- तकनीक का उपयोग करना: अनुसंधान, मल्टीमीडिया प्रस्तुतियाँ, और कोडिंग के लिए डिजिटल टूल्स का उपयोग करना ताकि तार्किक सोच और समस्या-समाधान क्षमताओं को बढ़ावा मिले।
- कला और रचनात्मकता को शामिल करना: आर्टिस्टिक गतिविधियों में शामिल होकर भावनात्मकता और आत्म-अभिव्यक्ति को उत्तेजित करना।

- जिज्ञासा को बढ़ावा देना: छात्रों को प्रश्न पूछने, पाठ्यक्रम के परे जाने, और नई विचार और दृष्टिकोणों की खोज करने के लिए प्रेरित करना।
- स्वतंत्रता अभ्यास: छात्रों को अपने अध्ययन यात्रा में विकल्प, परियोजना विषय, लचीले असाइनमेंट्स, और स्वतंत्र अध्ययन के अवसरों का चयन करने की अनुमति देना।
- विकास मानसिकता: चुनौतियों को स्वीकार करना, गलतियों से सीखना, और सामरिक आत्म-सुधारणा के लिए प्रयास करना।
- विविध परिप्रेक्ष्यों की खोज: छात्रों को अपने अनूठे अनुभव और दृष्टिकोणों को साझा करने के लिए प्रेरित करना ताकि चर्चाओं में विचार की विविधता लाई जा सके।

रचनात्मक सोच:

- **कृतिक सोच:** जानकारी, विचार, और परिस्थितियों का विवेचन सावधानीपूर्वक और तार्किक रूप से करना।
- **समस्या-समाधान:** चुनौतियों के लिए नवाचारी समाधान ढूंढना और ज्ञान को वास्तविक जीवन की स्थितियों में लागू करना।
- **जिज्ञासा:** आश्चर्य की भावना, प्रश्न पूछना, और निर्धारित पाठ्यक्रम से परे नए विचारों की खोज करना।
- **कल्पना:** नए और मौलिक विचारों को उत्पन्न करना, सूची जाने गए अवस्थाओं को जोड़ना, और बॉक्स के बाहर सोचना।
- **अभिव्यक्ति:** छात्रों को विभिन्न माध्यमों के माध्यम से निर्बंध रूप से अपनी भावनाएं व्यक्त करने की अनुमति देना, जैसे कि लेखन, कला, या प्रस्तुतियों के माध्यम से।

रचनात्मकता कई कारणों के लिए महत्वपूर्ण है:

- **नवाचार:** रचनात्मक व्यक्तियां विभिन्न क्षेत्रों में नए विचारों, उत्पादों, और समाधानों का विकसन करके नवाचार को बढ़ावा देती हैं।
- **अनुकूलन:** रचनात्मकता बॉक्स के बाहर सोचने और बदलते हुए परिस्थितियों के साथ अनुकूलन को बढ़ावा देती है, जिससे व्यक्ति एक तेजी से बदलते दुनिया में सहज हो जाता है।
- **व्यक्तिगत विकास:** छात्रों में रचनात्मकता का पोषण करने से कृतिक सोच, समस्या-समाधान, और निर्णय लेने के कौशलों को बढ़ावा मिलता है, जो सकारात्मक दृष्टिकोणों की ओर प्रोत्साहन करता है और आत्म-आत्मविश्वास को बढ़ावा देता है।

शैक्षणिक समिति:

शैक्षणिक समिति के रूप में, आपको छात्रों के लिए एक पोषणशील और समृद्धिक वातावरण प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। समृद्धिक संस्थानिक नीतियों का निर्माण और क्रियान्वित करना इस कार्य का मौलिक पहलु है। ये नीतियां शैक्षणिक, अनुशासन, सुरक्षा, और व्यक्तिगत विकास के सम्पूर्ण शैक्षणिक अनुभव के लिए आधार रखती हैं। ऐसी नीतियों को बनाते समय, शिक्षकों की अनिवार्य भूमिका को मान्यता और समर्थन करना महत्वपूर्ण है।

शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षकों का अनुभव और दृष्टिकोण शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और उनका यह योगदान शैक्षणिक संस्थान की नीतियों को छात्रों के समृद्धिक विकास के लिए वास्तविक रूप से आदर्श बनाने में महत्वपूर्ण है। इस ब्लॉग में, हम शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर विचार करेंगे और यह देखेंगे कि उनकी शामिलता से कैसे एक और प्रभावी और छात्र-केंद्रित शैक्षणिक वातावरण का निर्माण हो सकता है।

छात्रों की आवश्यकताओं की सूचना:

शिक्षकों को नीतिनिर्माण प्रक्रिया में शामिल करने का एक अधिकतम लाभ है कि उनका छात्रों की आवश्यकताओं के प्रति आत्मीय ज्ञान होता है। शिक्षक रोजाना छात्रों के साथ संवाद करते हैं, जिससे उन्हें उनकी शैक्षणिक क्षमताओं, आत्मिक स्वास्थ्य, और सामाजिक विकास की सटीक जानकारी होती है। इस प्रथम हाथ की जानकारी के आधार पर, शिक्षक स्कूली नीतियों में सुधार की आवश्यकता के क्षेत्रों को पहचान सकते हैं।

उदाहरण के लिए, शिक्षक पाठ्यक्रम के बारे में मौल्यवान प्रतिक्रिया प्रदान कर सकते हैं, जिसमें उनके छात्रों की विभिन्न शैक्षणिक शैलियों और क्षमताओं को ध्यान में रखने के लिए सुझाव दिया जा सकता है। वे यह भी बता सकते हैं कि किस प्रकार की आचारशृंगार समस्याएं हो सकती हैं जो नीति की आवश्यकता हो सकती है, जैसे कि छात्रों के बीच बुलीइंग या कक्षा में अव्यवस्था। शिक्षकों की जानकारी का उपयोग करके, स्कूल के मालिक छात्रों की बदलती आवश्यकताओं के प्रति अधिक प्रतिसादी नीतियां बना सकते हैं।

प्रभावी अनुशासन नीतियां:

अनुशासन किसी भी स्कूल वातावरण का एक महत्वपूर्ण पहलु है, और शिक्षक जब वर्ग में क्रम बनाए रखने और सकारात्मक वातावरण बढ़ावा देने के बारे में बात करते हैं, तो यह उनकी अनुभवों में बहुमुखी भूमिका निभाता है।

शिक्षक व्यावसायिक उन्नति में शिक्षकों के दृष्टिकोण को शामिल करना नीतियों को वृद्धि, पहुंचने और शिक्षकों की आवश्यकताओं के अनुसार रूपांतरित करने के लिए सुनिश्चित कर सकता है।

एक सहयोगी सांस्कृतिक निर्माण:

शिक्षकों को नीतिनिर्माण प्रक्रिया में शामिल करना भी विद्यालय समुदाय में सहयोग और साझेदारी की एक सांस्कृतिक रूप में योगदान कर सकता है। जब शिक्षक महसूस करते हैं कि उनकी आवाज सुनी जा रही है और उनका यह योगदान मूल्यवान है, तो वे विद्यालय के उद्देश्य और नीतियों के प्रति प्रतिबद्ध हो सकते हैं।

यह सहयोगी सांस्कृतिक से परे, यह स्कूल जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित कर सकता है, जैसे कि कर्मचारी के बीच टीमवर्क, माता-पिता-शिक्षक संबंध, और छात्र-शिक्षक आपसी क्रियावली। एक स्कूल जहां सभी स्तरदृष्टि एक साथ सामान्य लक्ष्यों की ओर काम करते हैं, वह छात्रों के लिए एक समर्थ और समृद्धिमय वातावरण बना सकता है।

इसके अलावा, शिक्षक शानदार न्याय कार्यक्रमों की डिज़ाइन में मदद कर सकते हैं जो संघर्ष समाधान और छात्रों के पुनर्निर्माण को प्राथमिकता देते हैं, शिक्षा संस्थान के पूर्णांतरित विकास के साथ अनुरूप होते हैं। ये कार्यक्रम छात्रों को सकारात्मक समाधान के माध्यम से संघर्षों का समाधान करने और उनके प्राकृतिक पोषण में मदद करने की दिशा में काम कर सकते हैं, जिससे अनुशासन नीतियों को पूर्णता दर्शन और पुनर्निर्माण के साथ मेल कर सकते हैं।

शैक्षणिक उत्कृष्टता:

शिक्षक सिर्फ शिक्षक नहीं बल्कि पाठ्यक्रम के कार्यान्विताओं भी हैं। उनके पास शिक्षा विधियों, मूल्यांकन रणनीतियों, और पाठ्यक्रम सामग्री के प्रभावकारिता के प्रति प्राथमिक ज्ञान है। यह विशेषज्ञता शैक्षणिक नीतियों को रूपांतरित करने के समय उत्कृष्टता को बढ़ावा देने में अत्यंत मूल्यवान है।

शिक्षा नीतियों में शिक्षकों की राय को शामिल करना प्रतिष्ठान का एक पाठ्यक्रम विकसित करने की ओर ले जा सकता है जो छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप मोहक, संबंधित और अनुकूलित हो। शिक्षक विभिन्न क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं जहां शिक्षा और सीखने के परिणामों को बढ़ावा देने के लिए अतिरिक्त संसाधन या पेशेवर विकास की जरूरत हो सकती है।

इसके अलावा, शिक्षक सिखाने प्रथाओं में सतत सुधार को प्रोत्साहित करने की नीतियों में मदद कर सकते हैं, जो एक उत्कृष्टता की सांस्कृतिक को बढ़ावा देने का एक माहौल बना सकती है जिससे छात्रों और शिक्षकों दोनों को लाभ हो।

व्यक्तिगत शिक्षा:

पूर्णांतरित शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य है प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत शक्तियों और प्रतिभाओं को पहचानना और पोषित करना। शिक्षक इन शक्तियों की पहचान करने और उन क्षेत्रों की पहचान करने में अद्वितीय रूप से स्थित हैं जहां छात्रों को अतिरिक्त समर्थन की आवश्यकता हो सकती है।

नियमित मूल्यांकन और आपसी प्रवासों के माध्यम से, शिक्षक व्यक्तिगत शिक्षा अनुभवों को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों पर मूल्यवान प्रविष्टि प्रदान कर सकते हैं। इसमें कक्षा के आकारों में समायोजन, विशेष शिक्षा कार्यक्रमों के लिए संसाधनों का आवंटन, या विविध छात्र आवश्यकताओं को ध्यान में रखने के लिए लचीले सीखने के मार्गों का कार्यान्वयन शामिल हो सकता है।

व्यक्तिगत शिक्षा नीतियां यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकती हैं कि प्रत्येक छात्र को शैक्षिक और व्यक्तिगत रूप से समृद्धि का अवसर हो, जिससे एक समृद्धिक और प्रभावी शैक्षणिक वातावरण बन सकता है।

सुरक्षा और स्वास्थ्य:

छात्रों की सुरक्षा और भलाइ किसी भी शैक्षणिक संस्थान के लिए प्रमुख चिंताएं हैं। शिक्षक अक्सर छात्रों के बीच उत्तेजना या सुरक्षा जोखिमों के संकेत को पहले नोट करने वाले होते हैं। उन्हें ऐसी नीतियों के विकसन में मदद करने वाली महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकते हैं जो छात्र स्वास्थ्य, मानसिक भलाइ, और सुरक्षा प्रोटोकॉल्स से संबंधित होती हैं।

शिक्षक उन नीतियों में योगदान कर सकते हैं जो बुलीइंग निवारण, मानसिक स्वास्थ्य समर्थन, आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रक्रियाओं, और स्वास्थ्य और सफाई प्रोटोकॉल्स जैसे मुद्दों को संबोधित कर सकती हैं। उनकी दृष्टिकोण से एक सुरक्षित और समर्थनशील वातावरण बनाने में उनके दृढ़ता का उपयोग किया जा सकता है, जिससे छात्र अपशिक्ष व्याकुलता या जोखिमों के बिना अपने सीखने और व्यक्तिगत विकास पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

व्यावसायिक विकास:

प्रभावी शिक्षण एक गतिशील प्रयास है जो लगातार सीखने और अनुकूलन की आवश्यकता है। शिक्षक शिक्षा में आगामी प्रवृत्तियों और शिक्षा में श्रेष्ठ प्रथाओं के बारे में कुशल हैं, जिससे उनकी राय पेशेवर विकास नीतियों के मामले में अत्यंत मूल्यवान है।

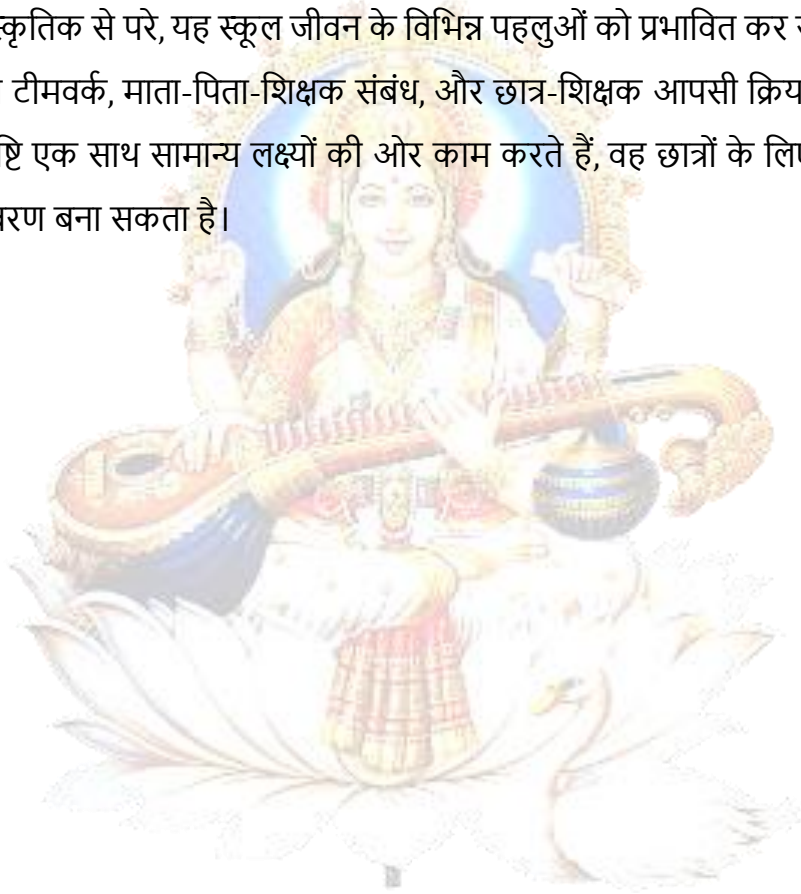
शिक्षकों की दृष्टिकोण को पेशेवर विकास नीतियों में शामिल करना सुनिश्चित कर सकता है कि वृद्धि के लिए अवसर संबंधित, पहुंचने वाले और शिक्षकों की आवश्यकताओं के अनुसार रूपांतरित होते हैं। इससे

अधिक प्रेरित और कुशल शिक्षकों का समृद्धि हो सकता है, जिससे सुधारित शिक्षा और समर्थन के माध्यम से छात्रों को लाभ हो सकता है।

सहयोगी सांस्कृतिक निर्माण:

शिक्षा नीतियों के निर्माण में शिक्षकों को शामिल करने से स्कूल समुदाय में सहयोग और साझेदारी की एक सांस्कृतिक रूप में योगदान हो सकता है। जब शिक्षक महसूस करते हैं कि उनकी आवाज सुनी जा रही है और उनका यह योगदान मूल्यवान है, तो वे विद्यालय के लक्ष्य और नीतियों के प्रति प्रतिबद्ध हो सकते हैं।

यह सहयोगी सांस्कृतिक से परे, यह स्कूल जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित कर सकता है, जैसे कि कर्मचारी के बीच टीमवर्क, माता-पिता-शिक्षक संबंध, और छात्र-शिक्षक आपसी क्रियावली। एक स्कूल जहां सभी स्तरदृष्टि एक साथ सामान्य लक्ष्यों की ओर काम करते हैं, वह छात्रों के लिए एक समर्थ और समृद्धिमय वातावरण बना सकता है।



शिक्षण कौशल में सुधार पर ध्यान केंद्रित करना

शिक्षण कौशलों में सुधार:

1. तकनीक को अपनाएं:

तकनीक ने महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए हैं जो कुल मौजूदा उत्पादकता के स्तर में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इंटरनेट में शिक्षा संसाधनों की अनगिनत संख्या है जिससे वे शिक्षण कौशलों में सुधार करना चाहते हैं। सॉफ्टवेयर प्रोग्राम्स, शिक्षात्मक ऐप्स, और हैंडहेल्ड डिवाइसेस जैसे डिजिटल सहायक शिक्षा उपकरण छात्रों की भागीदारी और प्रेरणा को बढ़ा सकते हैं।



2. शिक्षण उद्देश्यों की पहचान करें:

शिक्षक को ऐसी कुछ शिक्षात्मक गतिविधियाँ लिखनी चाहिए जो छात्र सामग्री/पाठ के अंत में कर सकेंगे। यह क्रिया सीधे रूप से दृष्टिगत होनी चाहिए। शिक्षात्मक उद्देश्यों को मन में रखना एक सिद्ध तरीका है जो वातावरण को बाहरी और बाहरी गतिविधियों और परीक्षणों की रचना को सुविधा प्रदान करने के लिए है।

3. सहयोगी शिक्षा का उपयोग करें:

छात्रों के समूहों को बनाएं जहां प्रत्येक समूह के सदस्यों को आपसी मुख-मुख, सकारात्मक अनेकता और व्यक्तिगत जवाबदेही हो। अनुसंधान के अनुसार, सहकारी रूप से शिक्षित छात्र विश्लेषणात्मक, नवाचारी, रचनात्मक और क्रितिक होते हैं, साथ ही सीखे गए सामग्री के बेहतर समझने में सक्षम होते हैं, जबकि पारंपरिक रूप से शिक्षित छात्र नहीं होते हैं।

4. छात्रों के अनुभव के बारे में पूछें:

एक कक्षा में, कुछ छात्र आगे हैं और कुछ कम तैयार हैं, लेकिन प्रत्येक श्रेणी को सीखते समय कुछ समस्याएँ आती हैं। शिक्षक को उनसे उनकी सीखने की चुनौतियों के बारे में पूछना चाहिए और ऐसी शिक्षा विधि विकसित करनी चाहिए जो सभी को आकर्षित करे। उनसे उनके कमजोर और मजबूत क्षेत्रों के बारे में पूछें, फिर उन्हें उनकी आवश्यकता के अनुसार सहायक सीखने का सामग्री दें।

5. सहकर्मी शिक्षा:

प्रत्येक शिक्षक के पास अपने हिस्से की क्षमता और ज्ञान होता है। हर अवसर को पकड़ें और विभिन्न स्कूलों के शिक्षकों से सहकर्मी हों। कुछ ऐसे हो सकते हैं जिनके पास अधिक शिक्षण अनुभव है और वे शिक्षण कौशलों में सुझाव देने में सक्षम हों। यह अवसर प्राप्त करें और विभिन्न स्तरों पर आयोजित शिक्षक सेमिनार्स में भाग लें।

6. अनुशासनबद्ध व्यवहार का संबोधन करें:

छात्रों के साथ जुड़ना आवश्यक है। हम इसे उन्हें छोटी बातचीतों में शामिल करके कर सकते हैं। हालांकि, ऐसा करते समय, ऐसे छात्रों से सावधान रहें जिनके पास विघटनात्मक आचरण है। इन छात्रों को हमेशा अनावश्यक विघटना बनाए रखना चाहिए। इनमें से अधिकांश ध्यान केंद्रीय व्यक्ति हैं और उन्हें प्रबंधित करने के लिए विभिन्न तकनीक और विधियाँ हैं।

7. शिक्षकों को अपग्रेड सुनिश्चित करें:

एक दशक से दूसरे दशक, एक युग से दूसरे युग में कई बदलाव हो रहे हैं। एक शिक्षक को इस बदलाव के साथ कदम से कदम मिलाकर रखना चाहिए और नई या संशोधित शिक्षा-सीखने की प्रक्रिया के नए तरीकों से खुद को अपग्रेड करना चाहिए।

8. पोर्टफोलियो का उपयोग:

पोर्टफोलियो शिक्षा परिणामों का मूल्यांकन करने के लिए एक सार्थक तकनीक प्रदान कर सकते हैं। इसमें छात्र उत्पन्न प्रश्न, राय जाँचें, ऑडियो टेप, अवधारणा मानचित्र, ज्ञान चेकलिस्ट्स और मिनट पेपर्स का उपयोग करके अपनी प्रगति और शिक्षण विधि की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करने की शिक्षा होती है।

शिक्षा कला है। इसमें आने वाली पीढ़ियों को मोल्ड करने के लिए बहुत यत्न की जरूरत है। शिक्षकों के पास न केवल अपने छात्रों को पढ़ाने का शक्ति है, बल्कि उन्हें प्रेरित और मार्गदर्शित करने की शक्ति भी है। उपरोक्त सुझावों का पालन करके, वे अपने शिक्षण कौशलों में सुधार कर सकते हैं और सुनिश्चित कर सकते हैं कि छात्रों को विचारशील और भविष्य के लिए बेहतर तैयार किया जाए।

करियर मार्गदर्शन

1. भविष्य के करियरों के साथ समरूपी:

व्यावासायिक शिक्षा गतिशील है, जो स्कूल के छात्रों को सीधे भविष्य के करियर मांगों की धड़कन में ले जाती है। हाथों की प्रशिक्षण और इंडस्ट्री के साथ मेल खाती पाठ्यक्रमों की सफल कहानी को ध्यान में रखें। उद्योग के विशेषज्ञों को शामिल करके हम सुनिश्चित करते हैं कि छात्र सिद्धांतिक ज्ञान और व्यावासायिक दक्षता प्राप्त करते हैं, जिससे वे भविष्य के नियोक्ताओं के लिए मूल्यवान संपत्ति बन जाते हैं।



2. आर्थिक विकास के लिए नींव बनाना: स्कूल स्तर पर व्यावासायिक शिक्षा में निवेश करना आर्थिक विकास के लिए बीज बोने जाने के समान है। सिंगापुर जैसे देशों ने दिखाया है कि समय रहते कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करने से एक राष्ट्र को एक वैश्विक आर्थिक केंद्र में बदला जा सकता है। व्यावासायिक शिक्षा के कार्यक्रमों में बढ़ती नामांकन से आर्थिक प्रतिस्पर्धा में सुधार होता है, जो स्कूल के छात्रों के लिए एक समृद्ध भविष्य की राह तय करता है।

3. रोजगार की दिशा में सहारा: व्यावासायिक शिक्षा केवल सिद्धांतिक शिक्षा नहीं है; यह स्कूल के बाद की अनिश्चितताओं के लिए एक प्रबल उपाय है। जर्मनी के शिक्षुता प्रणाली जैसे मॉडल्स को अपनाया युवा बेरोजगारी दरों को काफी कम कर सकता है। कक्षा की सीख को काम पर प्रशिक्षण के साथ मिलाकर एक कुशल श्रमसागर बनता है, जिससे स्कूल के छात्रों के लिए नौकरी करने का एक विश्वसनीय पथ प्रदान होता है।

4. युवा उद्यमियों की पोषणा: व्यावासायिक शिक्षा समझदारी की दीपक जलाती है, नवाचार की सांस बढ़ाती है। भारतीय उद्यमिता और लघु व्यापार विकास के राष्ट्रीय संस्थान (नीएसबीयूड) जैसे संस्थान आगे बढ़ने के लिए योजनाएं बनाते हैं। विशेष कक्षाएं और मेंटरशिप कार्यक्रमों के माध्यम से स्कूल के छात्र आवश्यक कौशल विकसित कर सकते हैं ताकि वे अपने विचारों को व्यावसायिक व्यापारों में बदल सकें, जिससे एक फूलता हुआ उद्यमिता परिदृश्य में योगदान हो।

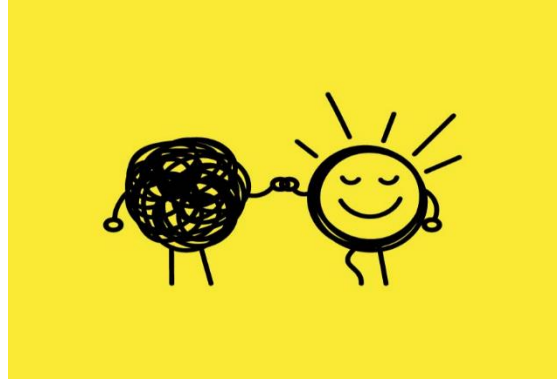
5. समृद्धि और आकांक्षा को प्रोत्साहित करना: व्यावासायिक शिक्षा समृद्धि को चिंगारी लगाती है, बाधाओं को तोड़ती है और सामाजिक आन्तरिकता के लिए पथ बनाती है। उदाहरण के लिए, ऑस्ट्रेलियाई व्यावासायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (वीईटी) प्रणाली की सफलता को देखें। विभिन्न कौशल स्तरों के लिए

विशेष पाठ्यक्रमों की पेशेवर शिक्षा के माध्यम से हम शिक्षा के लिए पहुंच को काफी बढ़ा सकते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि व्यावसायिक शिक्षा सामाजिक समृद्धि के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बन जाती है।



शिक्षा में सहानुभूति शिक्षा, छात्र मानसिक स्वास्थ्य

जबकि शिक्षा प्रणाली विकसित होती रहती है, वहाँ एक बढ़ती छानबीन है कि पारंपरिक शैक्षिक मापदंडों को पार करने और समृद्धि की दिशा में बढ़ने की आवश्यकता है। एक मुख्य पहलु जो महत्वपूर्ण हो रही है, वह छात्रों के बीच सहानुभूति की खेती है।



शिक्षा में सहानुभूति को शामिल करें:

सहानुभूति, दूसरों की भावनाओं को समझने और साझा करने की क्षमता, व्यक्तियों को करुणामय और सामाजिक दायित्वपूर्ण नागरिकों में रूपित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सहानुभूति को शिक्षा में शामिल करना केवल एक इच्छनीय गुण नहीं है बल्कि एक समृद्ध और समृद्ध समाज की स्थापना के लिए आवश्यकता है।

सहानुभूति को समझें:

सहानुभूति, दूसरों की भावनाओं को समझने और साझा करने की क्षमता है, उनके अनुभवों को समझने के लिए उनके जूतों में कदम रखना। शिक्षा के क्षेत्र में, यह रोट लर्निंग और परीक्षा स्कोर से आगे बढ़ता है, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, करुणा, और समृद्धि की भावना को महत्वपूर्ण बनाता है।

सहानुभूति के तीन स्तर:

सहानुभूति सामान्यतः एक प्रक्रिया में होती है जो विभिन्न स्तरों पर खुलती है। सहानुभूति के तीन प्रमुख स्तरों को अक्सर ज्ञात किया जाता है - ज्ञानात्मक सहानुभूति, भावनात्मक सहानुभूति, और करुणामय सहानुभूति।

1. ज्ञानात्मक सहानुभूति: ज्ञानात्मक सहानुभूति दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण, विचार या भावनाओं का बुद्धिमत्ता से समझने का है। इसमें यह क्षमता शामिल है कि कोई अन्य के भावनाओं को साझा किए बिना उन भावनाओं को समझ सकता है। यह किसी और के दृष्टिकोण को समझने के लिए एक आवश्यक आधार है।
2. भावनात्मक सहानुभूति: भावनात्मक सहानुभूति में, न केवल व्यक्ति के भावनाओं को बुद्धिमत्ता से समझना है, बल्कि इन भावनाओं को साझा करना भी शामिल है। इसमें यह क्षमता है कि दूसरों

की भावनाओं को साझा करने की योग्यता है। यह उन व्यक्तियों के साथ एक गहरा और व्यक्तिगत संबंध बनाता है।

3. करुणामय सहानुभूति: करुणामय सहानुभूति, जिसे सहानुभूतिक समर्थन या सहानुभूतिक क्रिया भी कहा जाता है, यह चरण है जहां भावनाओं के समझने और साझा करने से उत्पन्न होने वाला इच्छा है कि उस व्यक्ति की समझ में समर्थन या सहायता की जाए। करुणामय सहानुभूति सामान्यतः उस व्यक्ति के कल्याण के लिए वास्तविक चिंता से प्रेरित होकर अच्छाई, समर्थन या सहायता की क्रियाओं में परिणाम होती है।

शिक्षा में सहानुभूति का महत्व:

a. सांस्कृतिक विविधता:

भारत की समृद्धि से भरी सांस्कृतिक विविधा, जिसमें भाषाओं, परंपराओं और विश्वासों की अनगिनत विविधा है। सहानुभूति छात्रों को इस विविधता की मूल्यांकन करने और समर्पण की भावना को बढ़ावा देने में मदद करती है, जो अलग-अलगता के बीच एक एकता की भावना को पलटती है। यह एक समृद्धि वातावरण को बढ़ावा देती है जहां छात्र एक-दूसरे के अद्वितीय दृष्टिकोण से सीखते हैं।

b. प्रभावी संवाद:

सहानुभूति की भावना प्रभावी अंतरव्यक्तिगत कौशलों का एक मूल स्तम्भ है। भारत जैसे विविध भाषा और बोलचाल के देश में, सहानुभूति की बढ़ाई छात्रों को अधिक प्रभावी रूप से संवाद करने की क्षमता प्रदान करती है, भाषाई और सांस्कृतिक बाधाओं को पार करती है।

c. सामाजिक समरसता:

सहानुभूति सामाजिक समरसता की दृष्टिकोणशील निर्माण में सहायक है, सहिष्णुता को प्रोत्साहित करती है और संघर्षों को कम करती है। एक शिक्षण सेटिंग में, यह छात्रों को सामाजिक चुनौतियों को सामना करने के लिए औजार प्रदान करती है, समुदाय और सहकर्म सीखाती है।

d. मानसिक स्वास्थ्य और भलाइ:

शिक्षा सिस्टम की प्रतिस्पर्धी प्रकृति छात्रों पर बहुत दबाव डाल सकती है। सहानुभूति एक समर्थन वातावरण बनाती है जहां छात्र महसूस करते हैं कि उनकी समझ में आए हैं, तनाव को कम करती है और उनके सामान्य मानसिक स्वास्थ्य और भलाइ में योगदान करती है।

e. वैश्विक नागरिकता:

जबकि दुनिया बढ़ते हुए एकजुट हो रही है, वैश्विक नागरिकों को पलना महत्वपूर्ण है। सहानुभूति छात्रों को वैश्विक मुद्दों में शामिल होने, विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने और जटिल समस्याओं के समाधान पर सहयोग करने के लिए तैयार करती है।

संस्थान में सहानुभूति को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियां:

- 1. साहित्य और कला को शामिल करें:** विभिन्न दृष्टिकोणों, सांस्कृतियों, और अनुभवों को दिखाने वाले साहित्य और कला को मिलाएं। यह छात्रों को विभिन्न पृष्ठभूमियों के किरदारों की भावनाओं और संघर्षों से संबंधित करने में मदद करता है।
- 2. सेवा-सीखने परियोजनाएं:** छात्रों को ऐसी सेवा-सीखने परियोजनाओं में शामिल करें जो उन्हें अपने समुदायों में सक्रिय योगदान करने की अनुमति देती हैं। यह हैंड्स-ऑन दृष्टिकोण से जिम्मेदारी, दया और सहानुभूति की भावना पैदा करता है।
- 3. शिक्षायेताओं द्वारा रोल मॉडलिंग:** शिक्षकों का एक महत्वपूर्ण भूमिका है छात्रों के मूल्यों को आकार देने में। शिक्षायेता सहानुभूतिक व्यवहार की मॉडल बना सकते हैं, कक्षा में खुले संवाद और समझ में सहानुभूति को प्रोत्साहित करते हैं।
- 4. सहकर्मी सहयोग:** सहकर्मी शिक्षा के अवसर सृष्टि करें, जहां छात्र परियोजनाओं पर साथ में काम करें। यह उनके शैक्षिक कौशलों को न केवल बढ़ाता है बल्कि साथ ही टीमवर्क, सहानुभूति और आपसी समर्थन को बढ़ावा देता है।
- 5. सहानुभूति और नैतिक शिक्षा:** नैतिक और नैतिक शिक्षा के साथ सहानुभूति को मिलाना एक ऐसा महत्वपूर्ण कदम है जो एक समृद्ध सिखाने की अनुप्रयोगिता के देश में महत्वपूर्ण है। कहानियों, रोल-प्लेइंग, और वास्तविक जीवन के उदाहरणों के माध्यम से छात्र अपने क्रियाओं के नैतिक परिणामों की कदर करना सीख सकते हैं और दूसरों के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित कर सकते हैं। यह समृद्धि मूल्यों को बढ़ावा नहीं देता ही बल्कि समाज के कुल में समृद्धि का योगदान करता है।

जैसे ही शिक्षा सिस्टम समाज की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप सामंजस्यपूर्ण बनने की दिशा में बढ़ता है, सहानुभूति को शामिल करना एक परिवर्तनकारी बल के रूप में प्रकट होता है। सहानुभूति के प्रति उत्कृष्ट व्यक्तियों को पोषित करके संस्थान सामरिक और सामाजिक जिम्मेदार जनरेशन का निर्माण करते हैं। भारत में, जहां विविधता एक शक्ति है, सहानुभूति को शिक्षा का लक्ष्य ही नहीं बल्कि समृद्धि और समृद्धि के लिए समाज से मिलने वाले एक आवश्यकताओं होने के रूप में उभारना चाहिए।

विद्यार्थियों को कल के कार्यबल के लिए तैयार करें

कल के कार्यबल के लिए छात्रों को तैयार करें:

श्री खंडेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि इसके अधीन स्थित संस्थानों के छात्र कल के कार्यबल के लिए तैयार हों:

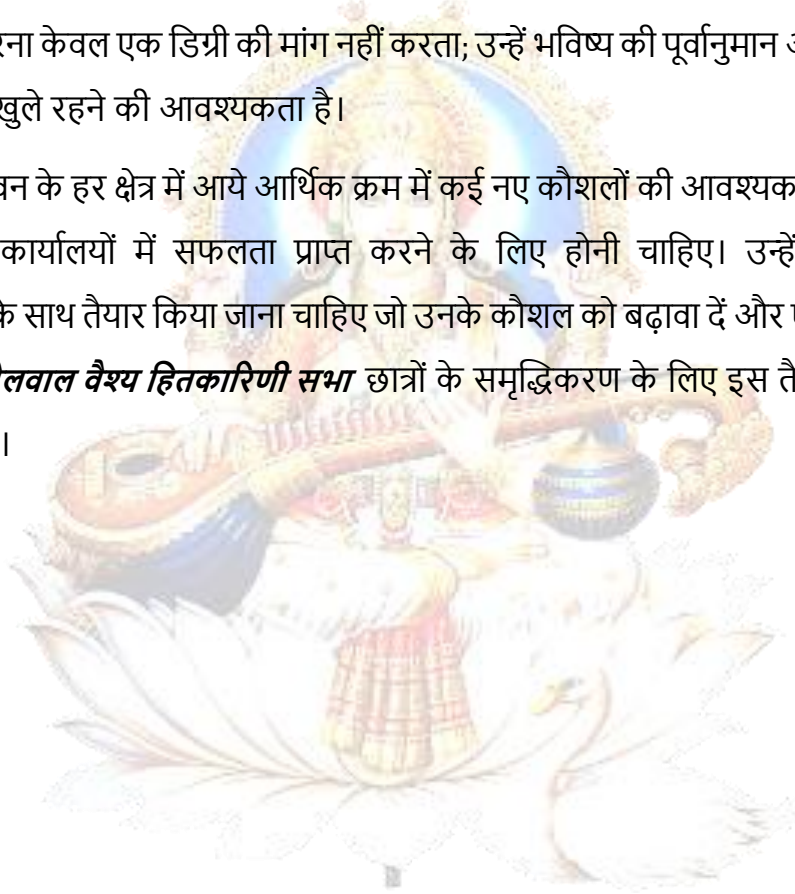


- 1. बुद्धिमान मशीनों का उदय:** कई विशेषज्ञों का कहना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, और स्वचालन में हो रही विकास उसी प्रमाण में होगा जैसे कि औद्योगिक क्रांति ने हमारे जीवन और काम के तरीके को बदल दिया था। ए.आई. और उन्नत स्वचालन पहले से ही विभिन्न क्षेत्रों में नौकरियों को बदल रहे हैं और जटिल कार्यों को बढ़ावा दे रहे हैं। छात्रों को प्रौद्योगिकी का सही तरीके से लाभ उठाना और उन्हें ऐसी डिजिटल कौशल प्राप्त करना चाहिए जो उन्हें भविष्य के शारीरिक या आभासी कार्यालयों के लिए तैयार करें।
- 2. तेजी की जरूरत:** व्यापार की गति बढ़ रही है, जल्दी प्रतिक्रिया देने और सीमित संसाधनों, लोगों, और समय के साथ सक्रियता में और ज्यादा काम करने की मांग बढ़ रही है। इस गति को पूरा करने और मांग को पूरा करने के लिए कार्य को अधिक कुशलता से करने के लिए छात्रों को समय प्रबंधन कौशल और उच्च दबाव क्षेत्रों में काम करने की क्षमता प्राप्त करनी चाहिए।
- 3. 21वीं सदी के कौशल:** भविष्य के कार्यबल के लिए आवश्यक है कि उम्मीदवारों में सहयोग, संवाद, और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता हो। कार्यस्थल में, इस बात के लिए जरूरी है कि यह सही रास्ते से पहुंचने के बजाय वहां पहुंचने का होशियारी से तरीका हो। छात्रों को भविष्य की नौकरियों में बेहतर संभावनाओं के लिए 21वीं सदी के कौशल अपनाने की आवश्यकता है।
- 4. असफलता का सामना करना:** आधुनिक सांस्कृतिक ने शिक्षा और बच्चों को पालने में "नहीं हार सकते" की दृष्टिकोण अपनाया है। शिक्षा में अव्वल योजना से कुछ माताएं अपने बच्चों को हमेशा बोर्ड खेलों में जीतने देने तक जाती हैं। हालांकि, यह उन्हें वास्तविक जीवन में मदद नहीं करता है। वैश्विक ज्ञान अर्थशास्त्र में, असफलता कार्य करने का स्वीकृत हिस्सा है। दुनिया को बदलने वाली विचारों और उत्पादों के बारे में सोचें - इन सफलताओं के मार्ग सिरमें असफलताओं से भरी होती हैं। प्रत्येक असफलता ने एक अनमोल सीखने का अवसर प्रदान किया। आज के बच्चे

डरते हैं। यह डर उनकी रचनात्मकता को कम करता है और उन्हें सीखने और करने के असली आनंद से वंचित करता है। सीखने का सत्यापन करके (घोषणात्मक ज्ञान) के लिए अब पर्याप्त नहीं है जो भविष्य के कार्यबल में बेहतर फिट हो। छात्रों को अपने सीखने को लागू करने की आवश्यकता है (प्रक्रियात्मक ज्ञान)।

5. **जीवित रहने के लिए अपग्रेड:** कौशल महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इन्होंने मौद्रिक व्यापार चुनौतियों का समाधान करने के लिए जरूरी हैं, जिनकी आवश्यकता एक श्रमशील बल को ओवरकम करने के लिए एक श्रमशील बल की आवश्यकता है। भविष्य की श्रमशील बल को आवश्यकता है जो अपने कौशल सेट को बढ़ा सकते हैं जब आवश्यक हो। छात्रों को यह समझना चाहिए कि नौकरी प्राप्त करना केवल एक डिग्री की मांग नहीं करता; उन्हें भविष्य की पूर्वानुमान और निरंतर सीखने के लिए खुले रहने की आवश्यकता है।

21वीं सदी ने जीवन के हर क्षेत्र में आये आर्थिक क्रम में कई नए कौशलों की आवश्यकता है जो व्यक्तियों को भविष्य के कार्यालयों में सफलता प्राप्त करने के लिए होनी चाहिए। उन्हें आज उन सभी आवश्यकताओं के साथ तैयार किया जाना चाहिए जो उनके कौशल को बढ़ावा दें और एक बेहतर भविष्य के लिए। **श्री खंडेलवाल वैश्य हितकारिणी सभा** छात्रों के समृद्धिकरण के लिए इस तैयारी को सुनिश्चित करने में संलग्न है।



कक्षा से परे सीखना

कक्षा के बाहर सीखना व्यक्तिगत विकास की समर्थन करने वाले विभिन्न रोचक अनुभवों, प्रयासों और गतिविधियों को शामिल करता है। इसमें कौशल, जानकारी और समझ को अनुभवों, विभिन्न दृष्टिकोणों के साथ परिचय, और अन्य साधनों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। यह और अधिक समृद्धिकरण के मूल्य को जोर देने वाला संज्ञानशील परिभाषा है और स्वीकृत है कि शिक्षा एक जीवनकालिक प्रक्रिया है जो विभिन्न रूपों में होती है और पाठ्यपुस्तकों से सीमित नहीं है।



अतिरिक्त गतिविधियाँ:

खेल, समूह या कला में भाग लें ताकि विभिन्न क्षमताओं को समृद्धि कर सकें।

वास्तविक दुनिया के अनुभव:

छात्रों को संबोधित शिक्षकों के सम्पूर्ण निर्देशन के तहत स्वयंसेवा या इंटर्नशिप के लिए प्रेरित किया जाता है।

ऑनलाइन सीखने के प्लेटफ़ॉर्म:

प्रत्येक समिति स्वयंसेवा कक्षा के बाहर स्रोत और पाठ्यक्रम सुनिश्चित करेगी।

सांस्कृतिक अन्वेषण:

समर्पित इवेंट्स में भाग लेने, संग्रहण के लिए म्यूजियम या यात्रा करने के लिए गतिविधियों के एक कैलेंडर का होगा।

नेटवर्किंग:

शिक्षक और छात्रों को पुस्तकों के बाहर ज्ञान प्राप्त करने के लिए अकादमिक घटनाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

स्वतंत्र परियोजनाएँ:

शिक्षकों को छात्रों के बीच रचनात्मकता और समस्या समाधान कौशल में सुधार के लिए परियोजनाओं का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

मेंटरशिप:

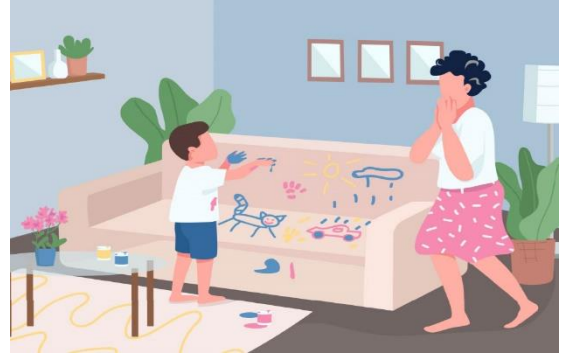
प्रत्येक संस्थान में स्वेच्छा से मेंटर्स/विशेषज्ञ परिषद होगी जो शिक्षकों और छात्रों को विभिन्न दृष्टिकोणों पर सलाह देने के लिए।



व्यवहार प्रबंधन रणनीतियों में माता-पिता को शामिल करें

परिचय:

संस्थान और माता-पिता के बीच सहयोग एक छात्र की शिक्षा की यात्रा में एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि इससे केवल शैक्षिक प्रदर्शन ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक विकास के जटिल क्षेत्र को भी प्रभावित किया जाता है।



पारंपरिक दृष्टिकोण:

पहले के दिनों में, स्कूल ने माता-पिता को व्यवहार नियंत्रण में शामिल करने के लिए पारंपरिक तकनीकों का उपयोग किया। नियमित घटनाएँ, शैक्षिक संदेश और आवश्यकता के अनुसार माता-पिता सभाएं इन दृष्टिकोणों में एक छात्र की शैक्षिक यात्रा में जानकारीपूर्ण परिप्रेक्ष्य प्रदान करती थीं, हालांकि ये दृष्टिकोण व्यावहारिक कठिनाइयों के जटिल जाल को हल करने में अक्सर अपर्याप्त साबित होते थे।

नवाचारी रणनीतियाँ खोलना:

छात्रों को सही व्यवहार करने में सहायक होने के लिए, संस्थान पुरानी तकनीकों को नई विचारों के साथ मिला सकता है। वे माता-पिता के साथ स्पष्ट संवाद कर सकते हैं, उन्हें उनके बच्चे की प्रगति पर अद्यतित रख सकते हैं, और उन्हें व्यवहार को समझने में मदद करने के लिए पाठ्यक्रम प्रदान कर सकते हैं। साथ मिलकर और एक ही रणनीतियों का उपयोग करके, माता-पिता और स्कूल यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि बच्चे को प्रोत्साहित किया जाता है और वह घर और स्कूल दोनों में सकारात्मक रूप से व्यवहार करना सीखता है।

संवाद के खुले साधन:

शिक्षकों और माता-पिता के बीच सीधी संवाद की रेखाएँ बनाकर, हमारे संस्थान अधिक संवाद पर केंद्रित होंगे। सूचनात्मक ईमेल, समाचार पत्र, और नियमित अपडेट्स के माध्यम से संस्थान व्यवहार प्रबंधन प्रक्रियाएं के माध्यम से पारदर्शिता और विश्वास को बढ़ावा देगा।

सक्रिय कार्यशालाएँ: ह

हमारे संस्थान माता-पिता के लिए सक्रिय कार्यशालाएं आयोजित करेंगे ताकि ज्ञान की कमी को पूरा किया जा सके। बच्चे के विकास से लेकर वास्तविक संवाद तक, ये कक्षाएं विभिन्न विषयों पर चर्चा करती हैं,

जिससे माता-पिता को अपने बच्चे के व्यावहारिक विकास का समर्थन करने के लिए आवश्यक साधन मिलते हैं।

माता-पिता-शिक्षक सहयोग:

हमारी समिति सुनिश्चित करेगी कि माता-पिता और शिक्षकों के बीच संबंध मजबूत हो रहे हैं। बच्चे के विकास, उनकी शक्तियों और संभावित विकास के क्षेत्रों पर चर्चा करने के लिए नियमित सम्मेलन प्रदान करना।

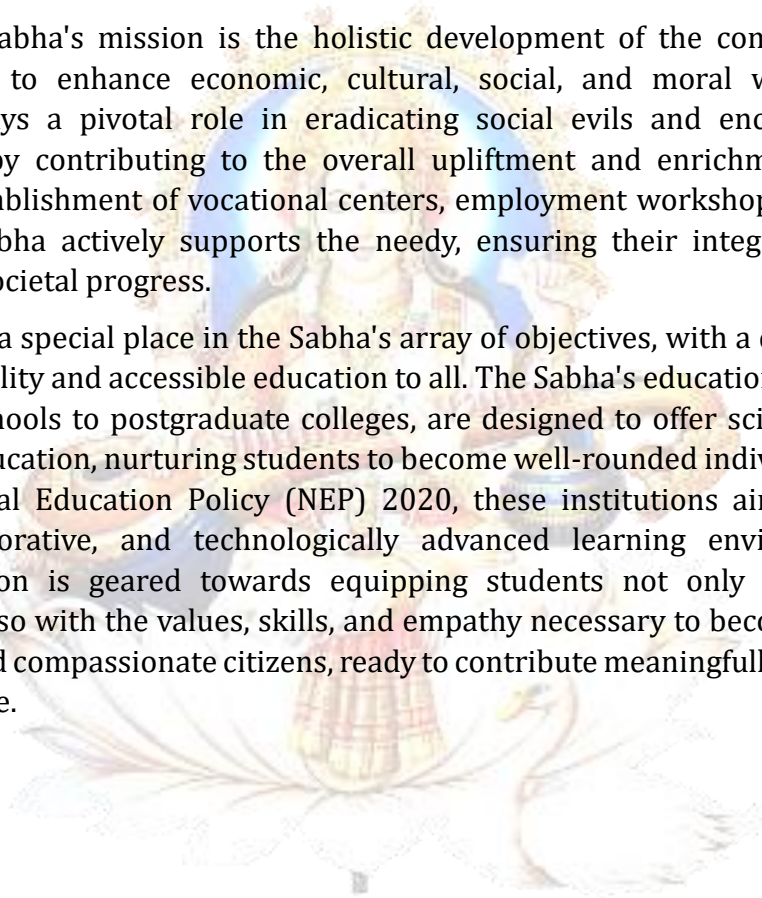


ABOUT SHRI KHANDELWAL VAISHY HITKARINI SABHA (SKVHS)

Shri Khandelwal Vaishy Hitkarini Sabha (SKVHS) is a distinguished organization dedicated to the welfare and development of the Khandelwal community of Jaipur, transcending barriers of caste, creed, gender, and religion. With a profound commitment to social service, the Sabha undertakes a variety of initiatives aimed at uplifting the underprivileged and fostering a spirit of unity and progress within the community. Its activities encompass a broad range of societal contributions, from providing essential services like food, clothing, shelter, and medical aid to the needy, to promoting cultural and religious harmony through the establishment of cultural centers, libraries, and places of worship.

Central to the Sabha's mission is the holistic development of the community, which includes efforts to enhance economic, cultural, social, and moral well-being. The organization plays a pivotal role in eradicating social evils and encouraging good practices, thereby contributing to the overall upliftment and enrichment of society. Through the establishment of vocational centers, employment workshops, and housing facilities, the Sabha actively supports the needy, ensuring their integration into the mainstream of societal progress.

Education holds a special place in the Sabha's array of objectives, with a dedicated focus on providing quality and accessible education to all. The Sabha's educational institutions, ranging from schools to postgraduate colleges, are designed to offer scientific, literary, and technical education, nurturing students to become well-rounded individuals. Aligned with the National Education Policy (NEP) 2020, these institutions aim to create an adaptive, collaborative, and technologically advanced learning environment. This educational vision is geared towards equipping students not only with academic excellence but also with the values, skills, and empathy necessary to become self-reliant professionals and compassionate citizens, ready to contribute meaningfully to society and the world at large.





Gyanchand Khandelwal
President

MESSAGE FROM PRESIDENT

Dear Esteemed Members, Educators, Students, and Well-Wishers,

It is with immense pride and a deep sense of responsibility that I address you as the President of Shri Khandelwal Vaishy Hitkarini Sabha. Our Sabha has long stood as a pillar of support, education, and community welfare for the Khandelwal Samaj, embodying the principles of unity, service, and progress. As we embrace the challenges and opportunities of the present times, our commitment to these ideals remains unwavering.

The launch of our Educational Vision Document marks a significant milestone in our journey towards excellence in education and holistic development. Inspired by the National Education Policy (NEP) 2020, this vision is a testament to our dedication to nurturing minds that are not only academically accomplished but also socially conscious, ethically grounded, and globally aware.

Our educational institutions, under the aegis of the Sabha, are more than just centers of learning. They are crucibles of character, innovation, and leadership, where the next generation is prepared to lead with empathy, integrity, and a deep commitment to societal welfare. As we move forward, let us reaffirm our resolve to make education a transformative experience that empowers our students to achieve their fullest potential and contribute meaningfully to the world.

I extend my heartfelt gratitude to all members of our community for their unwavering support and dedication to our mission. Together, we will continue to build a legacy of excellence, inclusivity, and service that will resonate for generations to come.

With warm regards,

A handwritten signature in black ink, appearing to be 'Gyanchand Khandelwal', written over a faint background of a lotus flower.

Gyanchand Khandelwal

President,

Shri Khandelwal Vaishy Hitkarini Sabha



Ajay K Gupta
General Secretary

MESSAGE FROM SECRETARY GENERAL

Esteemed Members of the Khandelwal Community, Esteemed Educators, and Our Beloved Students,

As the Secretary General of Shri Khandelwal Vaishy Hitkarini Sabha, it is an honor to connect with you through our Educational Vision Document. This document is not merely a blueprint for the future of education within our community; it is a reflection of our collective aspirations, values, and commitment to making a difference in the lives of our students and society at large.

Education is the cornerstone of personal and societal advancement. Recognizing this, we have endeavored to craft an educational framework that is dynamic, inclusive, and reflective of the needs of the modern world. Our vision is to create learning environments that foster critical thinking, creativity, and a spirit of innovation, underpinned by the rich cultural heritage and values of the Khandelwal Samaj.

We are at a pivotal moment in our history, where the integration of technology, emphasis on holistic development, and the nurturing of empathy and global citizenship are more crucial than ever. Our institutions are committed to embodying these principles, ensuring that our students are not just well-prepared for their careers but are also compassionate individuals who are ready to lead positive change.

I extend my deepest appreciation to our educators, parents, and community members for their relentless support and collaboration. Your dedication fuels our mission and inspires us to reach new heights. Let us continue to work hand in hand, with a shared vision and purpose, to pave the way for a brighter, more inclusive future.

With sincere gratitude and best wishes,

A handwritten signature in blue ink, appearing to be 'Ajay K Gupta', written over a faint watermark of a deity.

Ajay K Gupta

General Secretary

Shri Khandelwal Vaishy Hitkarini Sabha

CONTENTS

<i>OVERVIEW</i>	24
<i>VISION STATEMENT</i>	24
<i>MISSION STATEMENT</i>	24
HIGHLIGHTS OF NEW EDUCATION POLICY	25
To Design the Educational Structure:.....	25
Core Skills:	25
Classroom can include:.....	26
Creative thinking.....	26
Educational Committees:.....	27
Insight into Student Needs:	27
Effective Discipline Policies:.....	27
Academic Excellence:	27
Personalized Learning:.....	28
Safety and Well-being:	28
Professional Development :	28
Building a Collaborative Culture:	29
FOCUSSING ON IMPROVING TEACHING SKILLS	30
Improving teaching skills:.....	30
CAREER GUIDANCE	32
EMPATHY IN EDUCATION, STUDENT MENTAL HEALTH	33
Incorporate Empathy in Education:.....	33
Importance of empathy in education:	34
Strategies to Promote Empathy in Institution:.....	34
PREPARE STUDENTS FOR TOMORROW’S WORKFORCE	36
LEARNING BEYOND THE CLASSROOM	38
ENGAGE PARENTS IN BEHAVIOUR MANAGEMENT STRATEGIES	39

OVERVIEW

The Educational Vision Document serves as a strategic blueprint for the future development of the various educational institutions under the auspices of Shri Khandelwal Vaishy Hitkarini Sabha. This document encapsulates our strategic intent to align with the transformative principles of the National Education Policy (NEP) 2020, ensuring that our educational practices are adaptable, inclusive, and equipped to meet the challenges and opportunities of the 21st century. Contained within this document are detailed strategies and initiatives aimed at enhancing the quality of education across all levels, from primary to postgraduate studies, across our esteemed institutions. This document serves as a guiding light for our collective efforts, embodying our commitment to nurturing the potential of every student under the Sabha's care. It is a declaration of our dedication to crafting policies and environments that are not only conducive to academic excellence but also to the personal growth and development of our students, preparing them to navigate the complexities of the modern world with confidence and integrity.

VISION STATEMENT

Shri Khandelwal Vaishy Hitkarini Sabha will strive to ensure that the various educational institutions of Khandelwal Samaj under its overall management work towards building best educational institutions that helps students to learn knowledge and skills by innovating, adapting, and resetting learning as a more accessible, digital and collaborative experience enabling them fully equipped for self-employment or job ready professionals.

MISSION STATEMENT

Shri Khandelwal Vaishy Hitkarini Sabha entrusted with the crucial responsibility of providing a nurturing and enriching environment for students enrolled under its various educational institutions. Creating and implementing holistic policies is a fundamental aspect of this task. These policies now set forth aligned with the National Education Policy implementation set the foundation for the overall educational experience, encompassing academics, discipline, safety, and personal development. While crafting such policies, it is vital to recognize and harness the indispensable role that teachers play in this process.

HIGHLIGHTS OF NEW EDUCATION POLICY

To Design the Educational Structure:

The current 10+2 school structure will be replaced by a 5+3+3+4 pattern to reduce the burden of exams on students. This 5+3+3+4 structure is for 3 to 8 years, 8 to 11 years, 11 to 14 years, and 14 to 18 years. 12 years of education, 3 years of Anganwadi and pre-primary education are included in this structure.

Students are also trained in gardening, carpentry, pottery, painting, etc. They focus on vocational learning from grades 6-8 to explore their interests and learn practical skills. It aims to re-design the structure with inclusion of holistic development for the students. NEP 2020 also introduces computers and coding classes, which will be a positive step towards improving the learning process.

Core Skills:

The Ministry of Education should create a national mission on core literacy and numeracy. A national curriculum and pedagogical framework for daycare and early childhood education will be created by NCERT to reach all these students up to third grade. This implementation is planned to be completed by 2025.

The board exam mainly tests students' ability to memorize and rote learning. NEP 2020 proposes to test the students' critical thinking, rationalization, and creativity with the practical application of their knowledge. Critical thinking can be an important aspect of evaluating one's efforts and believing what one is doing is correct or not. The pattern of the test is in the form that tests the authenticity and factual knowledge.

a. Emphasis on Holistic Development:

The NEP emphasizes the importance of holistic development, recognizing that education goes beyond academic achievements. This aligns with fostering creativity, as it encourages educators to consider the overall development of a student, including their creative capacities.

b. Flexibility in Curriculum:

The NEP promotes flexibility in the curriculum, allowing schools to adopt innovative and creative teaching methods. This flexibility enables educators to tailor their approach to the needs and interests of their students, fostering a more creative and engaging learning experience.

c. Assessment Reforms:

The NEP recommends a shift in assessment methods, moving away from a focus solely on exams. This provides an opportunity to incorporate diverse assessment tools that recognize and evaluate creative thinking, problem-solving skills, and practical applications of knowledge.

d. Promotion of Multilingualism:

The NEP recognizes the importance of multilingualism and encourages using the mother tongue in early education. This approach can enhance creativity by allowing students to express themselves comfortably and creatively in their native languages.

Classroom can include:

- **Project-Based Learning (PBL):** Engaging students in hands-on, collaborative projects that require critical thinking and problem-solving skills.
- **Inquiry-Based Learning:** Encouraging students to ask questions, conduct independent research, and explore topics beyond the standard curriculum.
- **Arts Integration:** Incorporating activities such as drawing, painting, music, drama, and dance to stimulate creativity.
- **Technology Integration:** Using digital resources, virtual collaboration platforms, multimedia presentations, and coding exercises to enhance engagement and creative thinking.
- **Flexible Assignments:** Allowing students to choose project topics, formats, or methods, providing autonomy and fostering creativity.
- **Utilizing Technology:** Leveraging digital tools for research, multimedia presentations, and coding to enhance logical thinking and problem-solving skills.
- **Incorporating Arts and Creativity:** Participating in artistic activities like drawing, painting, music, drama, and dance to stimulate imagination and self-expression.
- **Cultivating Curiosity:** Encouraging students to ask questions, explore beyond the curriculum, and seek new ideas and perspectives.
- **Exercising Autonomy:** Allowing students choices in their learning journey, such as project choices, flexible assignments, and opportunities for independent study.
- **Developing a Growth Mindset:** Embracing challenges, learning from mistakes, and recognizing that effort leads to improvement.
- **Exploring Diverse Perspectives:** Encouraging students to share their unique experiences and viewpoints to bring a diversity of thought to discussions.

Creative thinking

- **Critical Thinking:** Analyzing information, ideas, and situations thoughtfully and logically.
- **Problem-Solving:** Finding innovative solutions to challenges and applying knowledge to real-world situations.
- **Curiosity:** Cultivating a sense of wonder, asking questions, and exploring new ideas beyond the prescribed curriculum.
- **Imagination:** Generating novel and original ideas, connecting seemingly unrelated concepts, and thinking outside the box.
- **Expression:** Allowing students to express themselves freely through various mediums, such as writing, art, or presentations.
- **Creativity is important for several reasons:**
- **Innovation:** Creative individuals contribute to developing new ideas, products, and solutions, fostering innovation in various fields.
- **Adaptability:** Creativity enhances thinking outside the box and adapting to evolving situations, making individuals more resilient in a rapidly changing world.
- **Personal Growth:** Nurturing creativity in students fosters critical thinking, problem-solving, and decision-making skills, promoting positive attitudes toward learning and boosting self-confidence.

Educational Committees:

As Educational Committee, you are entrusted with the crucial responsibility of providing a nurturing and enriching environment for students. Creating and implementing holistic institutional policies is a fundamental aspect of this task. These policies set the foundation for the overall educational experience, encompassing academics, discipline, safety, and personal development. While crafting such policies, it is vital to recognize and harness the indispensable role that teachers play in this process.

Teachers are the backbone of any educational institution, and their experiences and insights are invaluable when it comes to shaping school policies that genuinely cater to the holistic development of students. In this blog, we will delve into the vital role of teachers in the formulation and refinement of holistic school policies and how their involvement can lead to the creation of a more effective and student-centered educational environment.

Insight into Student Needs:

One of the most significant advantages of involving teachers in the policymaking process is their intimate understanding of student needs. Teachers interact with students on a daily basis, gaining insights into their academic abilities, emotional well-being, and social development. This firsthand knowledge allows teachers to identify areas where school policies may need adjustments or improvements.

For instance, teachers can provide valuable feedback on the curriculum, suggesting modifications to cater to the diverse learning styles and abilities of their students. They can also pinpoint specific behavioral challenges that may require policy interventions, such as bullying or classroom disruptions. By tapping into teachers' insights, school owners can create policies that are more responsive to the evolving needs of students.

Effective Discipline Policies:

Discipline is a critical aspect of any school environment, and teachers are on the front lines when it comes to maintaining order and fostering a positive atmosphere in the classroom. Their experiences in dealing with disciplinary issues, classroom management, and student conduct are indispensable for crafting effective discipline policies.

Teachers can offer perspectives on the root causes of behavioral problems, which can inform the development of proactive policies aimed at preventing such issues. They can also provide input on appropriate consequences and interventions for various infractions, ensuring that disciplinary measures are fair, consistent, and designed to promote growth rather than punitive action.

Furthermore, teachers can help in designing restorative justice programs that prioritize conflict resolution and the rehabilitation of students, aligning discipline policies with the school's commitment to holistic development.

Academic Excellence:

Teachers are not only educators but also curriculum implementers. They possess firsthand knowledge of the effectiveness of teaching methods, assessment strategies, and

curriculum content. This expertise is invaluable when it comes to shaping academic policies that promote excellence.

Incorporating teacher input into academic policy decisions can lead to the development of a curriculum that is engaging, relevant, and tailored to the needs of the students. Teachers can identify areas where additional resources or professional development are needed to enhance teaching and learning outcomes.

Furthermore, teachers can help establish policies that encourage continuous improvement in teaching practices, fostering a culture of excellence that benefits both students and educators.

Personalized Learning:

One of the key goals of holistic education is to recognize and nurture the individual strengths and talents of each student. Teachers are uniquely positioned to identify these strengths and areas where students may require additional support.

Through ongoing assessments and interactions, teachers can provide valuable input on policies that promote personalized learning experiences. This might involve adjustments to class sizes, the allocation of resources for special education programs, or the implementation of flexible learning pathways to accommodate diverse student needs.

Personalized learning policies can help ensure that every student has the opportunity to thrive academically and personally, leading to a more inclusive and effective educational environment.

Safety and Well-being:

The safety and well-being of students are paramount concerns for any educational institution. Teachers are often the first to notice signs of distress or safety risks among students. They can provide critical information that informs the development of policies related to student health, mental well-being, and safety protocols.

Teachers can contribute to policies that address issues such as bullying prevention, mental health support, emergency response procedures, and health and hygiene protocols. Their insights can help create a safe and supportive environment where students can focus on their learning and personal growth without undue distractions or risks.

Professional Development :

Effective teaching is a dynamic endeavor that requires continuous learning and adaptation. Teachers are keenly aware of the evolving trends and best practices in education, making their input invaluable when it comes to professional development policies.

Incorporating teacher perspectives into professional development policies can ensure that opportunities for growth are relevant, accessible, and tailored to the needs of educators. This can lead to a more motivated and skilled teaching staff, ultimately benefiting students through improved instruction and support.

Building a Collaborative Culture:

Involving teachers in the policymaking process also fosters a culture of collaboration and shared ownership within the school community. When teachers feel that their voices are heard and their expertise valued, they are more likely to be committed to the school's mission and policies.

This collaborative culture extends beyond policymaking and can positively impact various aspects of school life, including teamwork among staff, parent-teacher relationships, and student-teacher interactions. A school where all stakeholders work together toward common goals is more likely to create a harmonious and nurturing environment for students.



FOCUSSING ON IMPROVING TEACHING SKILLS

Improving teaching skills:

It can help keep students receptive, interactive, and engaged. It has the power to magically transform a dull topic into an interesting and exciting session. Students will always look forward to sessions by teachers with effective teaching skills in addition to passing tests with flying colors, which leaves the teacher highly motivated.



1. Embrace technology:

Technology has brought major changes that play an important part in achieving significant improvements in the overall level of productivity. The internet has infinite educational resources for anyone who wishes to improve their teaching skills. Digital-assisted learning tools such as software programs, educational apps, and handheld devices can accelerate students' participation and motivation.

2. Identify instructional objectives:

The teacher should put down some instructional activities that students will be able to accomplish at the end of the content/lesson. The action should be directly observable. Keeping instructional objectives in mind is a proven way to facilitate the construction of in and out-of-class activities and tests. Students will meet expectations if they are explicitly aware of what is required of them.

3. Use cooperative learning:

Form groups of students where members of each team should interact face to face, have positive interdependence and be held accountable individually. According to research, cooperatively taught students are more analytical, innovative, creative and critical, as well as have a better understanding of learned materials than conventionally taught students.

4. Ask about students' experience:

In a class, some students are advanced and some are less prepared, but each category faces some challenges when learning. The teacher should ask them about their learning challenges and develop a teaching method that appeals to all. Ask them about their weak and strong areas then give them supplementary learning materials according to their need.

5. Peer learning:

Each teacher has his/her share of ability and knowledge to offer. Grab every opportunity and interact with teachers from different schools. Some may come with higher teaching experience and would be able to provide invaluable tips on how to improve teaching skills. Seek the opportunity and attend teachers' seminars that are organized at different levels.

6. Learn to handle unruly behaviours:

Associating with students is imperative. We can do this by engaging them in small conversations. However, when doing so, beware of students who have disruptive behaviours. These students will always want to create unnecessary disruptions. A majority of them are attention seekers and there are different techniques and methodologies involved in managing them effectively.

7. Ensure Upgrade Teachers:

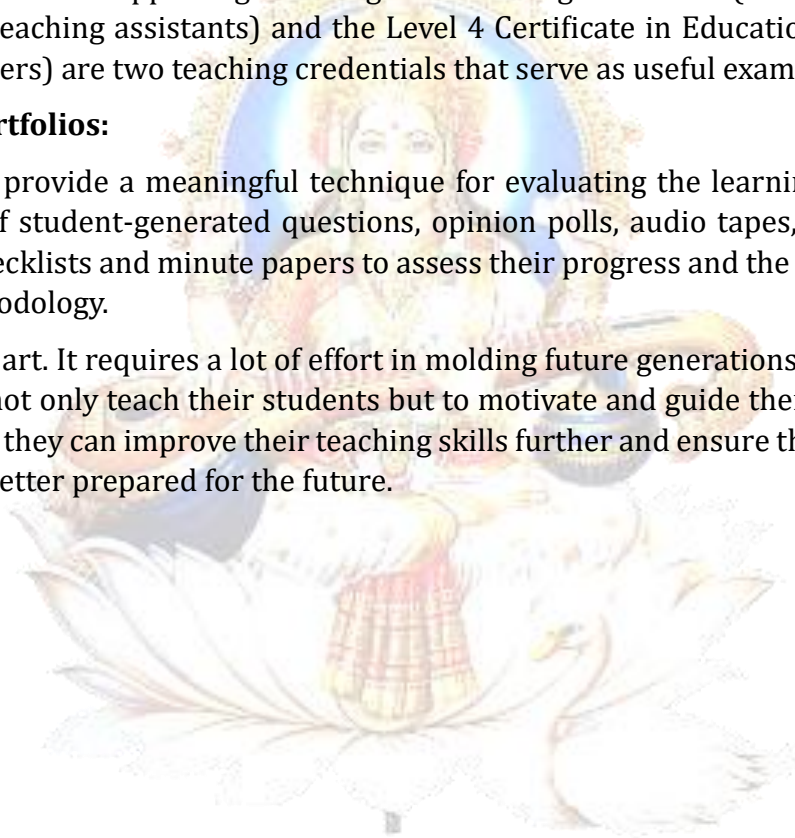
A lot of changes are happening from one decade to another, from one era to another. A teacher should keep up the pace with the changes and upgrade himself/herself with new or modified methods of the teaching-learning process.

One of the finest methods to develop the teaching abilities is by taking classes. The NCFE Level 3 Certificate in Supporting Teaching and Learning in Schools (for newly qualified teachers and teaching assistants) and the Level 4 Certificate in Education and Training (for new teachers) are two teaching credentials that serve as useful examples.

8. Use of portfolios:

Portfolios can provide a meaningful technique for evaluating the learning outcomes. It involves use of student-generated questions, opinion polls, audio tapes, concept maps, knowledge checklists and minute papers to assess their progress and the effectiveness of teaching methodology.

Teaching is an art. It requires a lot of effort in molding future generations. Teachers have the power to not only teach their students but to motivate and guide them. By following the tips above, they can improve their teaching skills further and ensure that students are engaged and better prepared for the future.



CAREER GUIDANCE

1. Alignment with Future Careers

Vocational education is dynamic, propelling school students directly into the heart of future career demands. Consider the success story of programs that integrate hands-on training and industry-aligned curriculum. By involving industry experts, we ensure that students gain theoretical knowledge and practical expertise, making them valuable assets to future employers.



2. Building Foundations for Economic Growth

Investing in vocational education at the school level is akin to sowing seeds for economic growth. Countries like Singapore have demonstrated how focusing on early skills development transforms a nation into a global economic hub. Increased enrollment in vocational education programs correlates with improved economic competitiveness, setting the stage for a prosperous future for school students.

3. Easing the Transition to Employment

Vocational education is not just theoretical learning; it's a potent remedy for uncertainties post-school. Adopting models like Germany's apprenticeship system can significantly reduce youth unemployment rates. Integrating classroom learning with on-the-job training creates a skilled workforce, providing a reliable pathway for school students to enter the job market with confidence and competence.

4. Nurturing Young Entrepreneurs

Vocational education sparks the flame of entrepreneurship early on, fostering a culture of innovation. Institutions like India's National Institute for Entrepreneurship and Small Business Development (NIESBUD) empower aspiring young entrepreneurs. Through specialized courses and mentorship programs, school students can develop the necessary skills to turn their ideas into viable businesses, contributing to a thriving entrepreneurial landscape.

5. Promoting Inclusivity and Aspiration

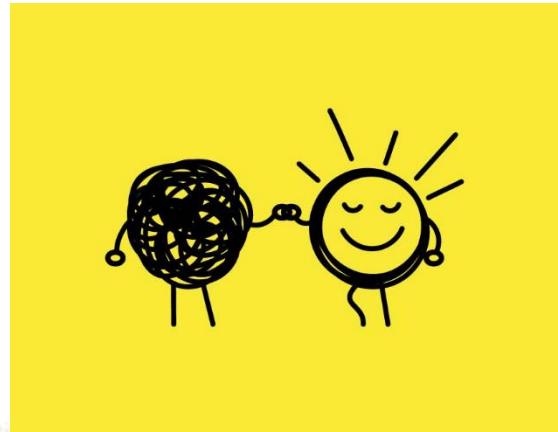
Vocational education catalyzes inclusivity, breaking down barriers and creating pathways for social mobility. Take, for instance, the success of the Australian Vocational Education and Training (VET) system. By offering diverse courses tailored to various skill levels, we can significantly increase access to education for school students from all backgrounds. This ensures a more inclusive society where vocational education becomes a powerful tool for social upliftment.

EMPATHY IN EDUCATION, STUDENT MENTAL HEALTH

As the education system continues to evolve, there is a growing recognition of the need to move beyond traditional academic metrics and focus on holistic development. One key aspect that has gained prominence is the cultivation of empathy among students.

Incorporate Empathy in Education:

Empathy, the ability to understand and share the feelings of others, plays a pivotal role in shaping individuals into compassionate and socially responsible citizens. Integrating empathy into education is not just a desirable trait but a necessity for fostering a harmonious and inclusive society.



Understanding empathy:

Empathy is the ability to understand and share the feelings of others, stepping into their shoes to comprehend their experiences. In the realm of education, it goes beyond rote learning and exam scores, emphasizing the development of emotional intelligence, compassion, and a sense of community.

Three stages of empathy

Empathy generally involves a process that unfolds in several stages. The three primary stages of empathy are often described as cognitive empathy, emotional empathy, and compassionate empathy.

1. Cognitive Empathy:

Cognitive empathy refers to the intellectual understanding of another person's perspective, thoughts, or emotions. It involves the ability to grasp someone else's feelings without necessarily sharing those emotions.

It is an essential foundation for deeper empathetic responses because it allows individuals to understand the perspective of someone else.

2. Emotional Empathy:

Emotional empathy involves not only understanding someone else's feelings on an intellectual level but also sharing in those emotions. It is the ability to vicariously experience the emotions of others.

They may feel joy, sorrow, excitement, or distress alongside the person they are empathizing with. Emotional empathy creates a more profound and personal connection.

3. Compassionate Empathy:

Compassionate empathy, also known as empathic concern or empathic action, is the stage where the understanding and sharing of emotions lead to a desire to help or support the person experiencing those emotions.

Compassionate empathy often results in acts of kindness, support, or assistance, driven by a genuine concern for the well-being of the other person.

Importance of empathy in education:

a. Cultural Diversity:

India's rich cultural diversity, with a myriad of languages, traditions, and beliefs. Empathy helps students appreciate and respect this diversity, fostering a sense of unity amidst differences. It encourages an inclusive environment where students learn from each other's unique perspectives.

b. Effective Communication:

Empathetic communication is a cornerstone of effective interpersonal skills. In a country as diverse as India, where languages and dialects vary widely, cultivating empathy enables students to communicate more effectively, transcending linguistic and cultural barriers.

c. Social Harmony:

Empathy is instrumental in building social harmony, promoting tolerance, and reducing conflicts. In an educational setting, it equips students with the tools to navigate social challenges, fostering a sense of community and cooperation.

d. Mental Health and Well-being:

The competitive nature of the education system can place immense pressure on students. Empathy creates a supportive environment where students feel understood, reducing stress and contributing to their overall mental health and well-being.

e. Global Citizenship:

As the world becomes increasingly interconnected, nurturing global citizens is crucial. Empathy prepares students to engage with global issues, understand different worldviews, and collaborate on solutions to complex problems.

Strategies to Promote Empathy in Institution:

1. Incorporate Literature and Arts:

Integrate literature and arts that showcase diverse perspectives, cultures, and experiences. This helps students relate to the emotions and struggles of characters from different backgrounds.

2. Service-Learning Projects:

Engage students in service-learning projects that allow them to actively contribute to their communities. This hands-on approach fosters a sense of responsibility, compassion, and empathy towards those in need.

3. Role Modeling by Educators:

Teachers play a pivotal role in shaping students' values. Educators can model empathetic behavior, encouraging open communication and understanding in the classroom.

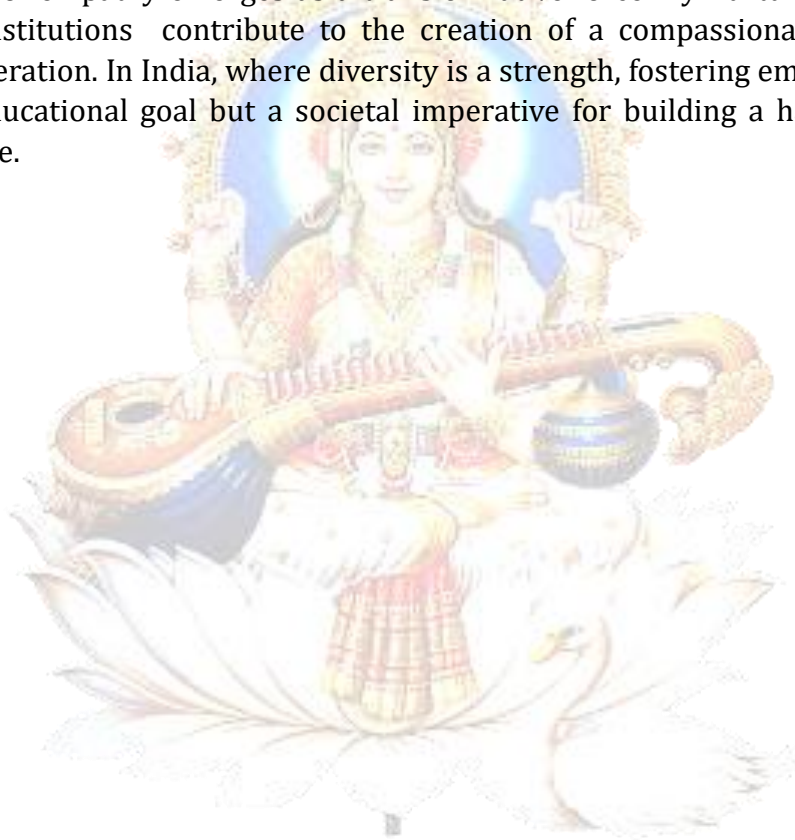
4. Peer Collaboration:

Create opportunities for collaborative learning, where students work together on projects. This not only enhances their academic skills but also promotes teamwork, empathy, and mutual support.

5. Empathy and Moral Education:

In a country with a rich history of moral and ethical teachings, incorporating empathy into moral education becomes paramount. Through stories, role-playing, and real-life examples, students can learn to appreciate the moral implications of their actions and develop a sense of responsibility towards others. This holistic approach not only enhances moral values but also contributes to the overall well-being of society.

As the education system continues to adapt to the changing needs of society, the incorporation of empathy emerges as a transformative force. By nurturing empathetic individuals, Institutions contribute to the creation of a compassionate and socially conscious generation. In India, where diversity is a strength, fostering empathy becomes not just an educational goal but a societal imperative for building a harmonious and inclusive future.



PREPARE STUDENTS FOR TOMORROW'S WORKFORCE

Shri Khandelwal Vaishay Hitakarini Sabha will strive to ensure under institutions under it, students need to be prepared for tomorrow's workforce:

1. Rise of intelligent machines

Many experts are predicting that development in artificial intelligence, robotics and automation will transform the way we live and work, on a scale similar to the industrial revolution.



AI and advanced automation are already transforming jobs and augmenting complex tasks in a variety of fields. The students need to know how to leverage technology and have the right digital skills that will prepare them for a variety of work environments, whether physical or virtual, in the future workforce.

2. The need for speed

The speed of business is increasing and so is the demand to be able to respond quickly—the need to do more with fewer resources, people, and time. You need to perform the task more efficiently to meet that pace and fulfill the demand. Students need to learn time management skills and the ability to work in pressure environments for tomorrow's workforce.

3. 21st-century skills

The futuristic workforce requires candidates to be able to collaborate, communicate and solve problems. The need to imbibe emotional intelligence along with problem-solving skills to perform the task. In the workplace, it's not just about getting to the right end, but getting there by the best path. Students need to inculcate 21st-century skills for better shots at futuristic jobs.

4. Dealing with failure

Modern culture has taken a “can't-fail” approach to education and raising children. In a misguided attempt to increase kids' confidence, some parents go so far as to let their kids always win at board games. However, this does not help them in the real world. In the global knowledge economy, failure is an accepted part of doing a job.

Think about ideas and products that changed the world – the pathways to these successes are strewn with failures. Each failure offered a priceless learning opportunity. Kids today are afraid to fail.

This fear saps their creativity and deprives them of the true joy of learning and doing. Learning by being told (declarative knowledge) is no longer sufficient for the future. Students need to apply their learning (procedural knowledge) to fit better in the future workforce.

5. Upgrade to survive

Skills are critical because they address core business challenges, with the competencies needed in a workforce to overcome those challenges. The future workforce does need individuals who can enhance their skill sets when required. Students need to understand that getting a job doesn't simply demand a degree; they also need to anticipate the future and be open to continuous learning.

The change in the economic order that the 21st century has brought in every walk of life requires many new skills that individuals need to possess to succeed in future workplaces. They need to be prepared today with all the requirements that will enhance their skills for a better future.



LEARNING BEYOND THE CLASSROOM

Learning outside of the classroom includes a wide range of engaging experiences, endeavors, and activities that support personal development. It includes gaining skills, information, and understanding through experiences, exposure to various viewpoints, and extracurricular activities, among other means. This more inclusive definition emphasizes the value of holistic development and acknowledges that education is a lifelong process that takes place in various forms and is not limited to textbooks.



Extracurricular Activities: Participate in sports, groups, or the arts to hone a variety of abilities.

Real-world Experiences: Students are encouraged for volunteering or doing internships under overall supervision of teachers.

Online learning platforms: Each Committee will ensure resources and courses outside of the classroom.

Cultural exploration: There will be calendar of activities for participating in vents visit museums, or take a trip to get a different viewpoint.

Networking: Teachers & Students to be encouraged for participations in academic events to gain knowledge outside of textbooks.

Independent Projects: Teachers will be encouraged to devise [projects to improve creativity and problem-solving skills among students .

Mentorship: Each Institution will have voluntary mentors/ expert board to advice teachers and students on various perspectives.

ENGAGE PARENTS IN BEHAVIOUR MANAGEMENT STRATEGIES

Collaboration between institutions and parents is a crucial factor in a student's learning journey since it influences not just academic performance but also the complex domain of behavioral development.

Introduction:

Collaboration between institutions and parents is a crucial factor in a student's learning journey since it influences not just academic performance but also the complex domain of behavioral development.



Traditional Approaches:

In earlier days, schools used traditional techniques to involve parents in behavior control. The regulars were frequent school events, educational messages, and periodic parent-teacher conferences. Although these approaches offered insightful perspectives into a student's educational journey, they frequently proved inadequate in tackling the complex web of behavioral difficulties.

Unveiling Innovative Strategies

To help students behave effectively, Institution might combine old methods with fresh ideas. They can communicate openly with parents, keep them updated on their child's progress, and provide courses to help them understand behavior. Working together and using the same strategies, parents and schools can ensure that children feel encouraged and learn to behave positively both at home and at school.

Open Channels of Communication:

By creating open lines of communication between teachers and parents, our institutions will focus on more communication. Transparency and trust will be fostered by the institutions behavior management procedures, through informative emails, newsletters, and regular updates.

Interactive Workshops:

Our Institutions will be holding interactive workshops for parents to close the knowledge gap. From comprehending child development to practical communication techniques, these classes cover a wide range of subjects, giving parents the tools they need to actively support their kid's behavioral development.

Parent-Teacher Collaboration:

Our committee will ensure relationship between parents and teachers is growing stronger. Frequent conferences to provide a setting for discussing a child's development, strengths, and possible areas for growth.

SHRI KHANDELWAL VAISHYA P. G. COLLEGE

After a successful journey in the field of education by Khandelwal Samaj, in 1983 it was decided By the than Hitkarni Sabha to open a college for Higher education for society. The Dream behind this was to provide complete education From Primary to Graduation. At that time Hitkarni Sabha do not have its own Land and Building for operating college. Even after this our supreme Body Hitkarni Sabha has decided to open college in the Building of Khandelwal Vaishya Balika School, S.C.Road , Jaipur in 1983 under the name of Khandelwal vaishay College .

And efforts were started for allotment of land for college in the year of 1983. Finally, 34000 sq mtrs land at Shastri Nagar, Jaipur was allotted in the year 1984. After that Hitkarni Sabha has started the construction of Boundary wall and suitable Building for running College classes with the Hole hearted support of our Khandelwal Samaj Donners / Bhamasha. Within Two Years of time Hitkarni Sabha has completed the construction of Building which has Twenty five class Rooms, Library, Laboratory Rooms, Principle Room, Staff room, Seminar Hall, management Hall, Facility Room and Reception Room and started classes in its own College Building.

Presently Khandelwal vaishay P.G. College – Shastri Nagar is running following U.G. and P.G. Courses :-

U.G. Cources	P.G. Cources
B.A.	M.A. (Economics)
B.COM.	M.A. (Geographic)
B.SC.	M.Sc. (Chemistry)
B.C.A.	M.Com. (ABST)



SHRI KHANDELWAL VAISHYA P. G. COLLEGE

Khandelwal College Rd, Ram Nagar, Shastri Nagar, Jaipur, Rajasthan 302016

MAJOR COLLEGE FACILITIES

- Clean & airy large study rooms with new steel furniture.
- Huge Library having more than 5000 Books .
- Well equipped Laboratoty for Science students .
- Computer Lab for BCA students.
- Play ground for Cricket, Bollyball, Badminton etc.
- Drinking water cooler for students.
- Cultural programme .
- Half yearly Blood donation camp.
- Guidance to students for opening own Business / Jobs.
- Students are provided training of traffic rules.
- Waiving of the fees for financially weak students.

FUTURE PLANS

- Construction of base ball court, Tannis Court.
- Open Cricket academy.
- Proffesors training by renovated facaulties.
- Upgradation of Library with complete computer.
- Aggangement of Industrial visits for students.
- Camps for cooking, Dancng, Sewing / Tailoring etc.
- Construction of Canteen for students.
- Routine Health Check up and Blood Donation Camps.

SHRI KHANDELWAL VAISHYA CENTRAL HIGHER SECONDARY SCHOOL

"SHRI KHANDELWAL VAISHYA CENTRAL HIGHER SECONDARY SCHOOL" is a reputed and well-known educational institution of Gulabi Nagari, Jaipur, was Established as a Primary School on Magh Shukla "BASANT PANCHAMI" AD 1973 on 17 January 1917

This school was started in kishanpole Bazar premises, later on shifted to Chandpole Bazar premises.

The Foundation of Present Building was laid on April 2,1925 by the then President of the Residency Council Mr. L.W. Renaud's. In the courtyard of the Ganga Mata Temple, at Station Road, Chandpole Bazar Jaipur given by Mr. Nadir Durgabaksh Ji.

The school was upgraded to "High School" in July 1955 further upgraded to "Higher Secondary School" in 1969. The school was recognized by Board of Secondary Education of Rajasthan, Ajmer.

The school was upgraded to Senior Secondary School in 1988 . Students from from every corner of the country was regularly provided education and School was operated in two shifts. The School has provided education to more than Fifty thousand student of every corner of the country.

The name of the school was counted among the best schools of Jaipur . The school was at its peak in the 90s.



SHRI KHANDELWAL VAISHYA CENTRAL HIGHER SECONDARY SCHOOL

Ganga Mata Temple, at Station Road, Chandpole Bazar Jaipur

MAJOR SCHOOL FACILITIES

- Healthy Environment and State of Art Infrastructure
- Digital Classrooms
- AUDITORIUM
- Well equipped Laboratory for Science students
- Cultural programme



SHREE KHANDELWAL VAISHY BALIKA SR. SEC. SCHOOL

After India's Independence, The Khandelwal Community had planted a sampling of education with a dream that it would grow into a banyan tree & give happiness to the coming generations. The flow of time kept changing.

The plant of education also flourished due to the continuous efforts of the society. This school was established as a primary school on 2nd October 1951, on the auspicious day they of Gandhi Jayanti. Shree Khandelwal Vaishy Balika Sr. Sec. School is running with Art's/Commerce subjects in Hindi and English Medium. We understand that girls don't respect one house but two houses, hence, apart from academic knowledge, civilization, cultural values and practical knowledge useful in life are also provided in the school for the all-round development of the students.

EDUCATIONAL SYSTEM-

1. Play group to 5th CO-EDUCTION (ENGLISH & HINDI MEDIUM)
2. Play group to 12th class

ART'S TERM - Hindi optional, English optional , Economics ,History , Sociology , Political Science ,Home Science , Sanskrit, Hindi Literature, English Literature.

COMMERCE TERM - Accountancy, Economic & Financial Studies, Business Organization, Mathematics Computers , Typing.



SHREE KHANDELWAL VAISHY BALIKA SR. SEC. SCHOOL
SANSAR CHAND ROAD, JAIPUR PHONE-0141-400169

MAJOR SCHOOL FACILITIES

- Clean & airy large rooms.
- Health check-up of all the students is done by medical experts.
- Teaching by smart boards with projector.
- Teaching work through worksheets in PRE-PRIMARY classes.
- Interactive & inclusive education system by trained teachers
- Swings, slides, see-saw, toys for children.
- Play group with all facilities for small kids
- Yoga training.
- Monitoring and Evaluation
- Clean R.O. water. Neat & Clean toilets.
- Basket ball/badminton/ indoor games with huge play ground
- Cultural Program, activities in addition to teaching subjects.
- Students are provided training of traffic rules.
- Minority scholarship.
- Waiving of the fees for financially weak students
- Safe and secure separate entry and exit with Vehicle parking facility

FUTURE PLANS

- Indoor & Outdoor game facility available for sports.
- Sports & other educational competitions in inter-school and school.
- Workshops are organized from time to time keeping personality development in mind.
- Arrangements will be made to learn calligraphy writing style.
- Arrangement of library , computer, home science laboratory.
- Furniture for the head office of the institution.
- Sepical arrangements will be made for educational tours.
- Internet & WI-FI facility.
- Display boards related work .
- In the summer vacation, countinuous teaching arrangements will be made to improve the writing teaching style of the weak students so that the students can build a beautiful and strong future.

MANAGEMENT COMMITTEES

Shri Khandelwal Vaishy Hitkarini Sabha



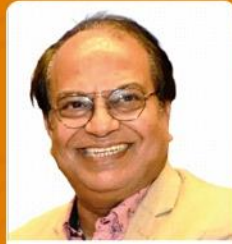
Gyanchand
Khandelwal

President



Vishamber
D. Khandelwal

**Excutive
President**



Ajay K. Gupta

**General
Secretary**



Pushpendra
Khandelwal

Treasurer



Dinesh
K.Natani

**Jt. Office
Secretary**



Dr. Rakesh
Dusad

**Education
Secretary**



Harishankar
Gupta

**Finance
Secretary**



Sanjay Gupta

**Culture
Secretary**



Rajendra
Kumar Gupta

HR Secretary



Dr. Anshul Shah

**Health
Secretary**



Giriraj
Kishore Gupta

**Legal
Secretary**



Sitaram
Khandelwal

**Construction
Secretary**



Babu
Lal Gupta

**Exe. Vice
President**



Dinesh
Kanungo

**Vice
President**

Shri Khandelwal Vaishy Snatkottar (P.G.) Mahavidhyalaya

Tarachand
Gupta

President

Kailash
Kumar Gupta

Vice President

Vinod Gupta

Treasurer

Navin Atolia

Joint Secretary

Rajendra
K Dhamani

Secretary

Member

Rajesh
Kumar Gupta

Tanuj Gupta

Ravi Sonkhiya

Rajesh Ghiya

Avdesh Katta

MANAGEMENT COMMITTEES

Shri Khandelwal Vaishy Kendriya Senior Secondary School (Hindi & English Medium)

Ravindra
Badaya

President

Dr. Vipin
Khandelwal

Joint Secretary

Rajendra
P Gupta

Secretary

Prakash
C. Jhalani

Vice President

Dr. Dinesh Shah

Treasurer

Member

Gopal
Krishna Gupta

Piyush Shah

Rajesh K. Gupta

Anurag Dusad

Nikhil Tambi

Shri Khandelwal Vaishy Balika Senior Secondary School (Hindi & English Medium)

Mahesh
Khandelwal

President

Ramavtar
Koolwal

Treasurer

Govind Gupta

Joint Secretary

Ghanshyam
Das Badaya

Secretary

Madhav Bihari
Khandelwal

Vice President

Member

Priyanka
Choudhary

Sangeeta Gupta

Ashish Kedawat

Malchand Gupta

Neeraj Sonkhiya

Shri Khandelwal Vaishy Senior Secondary School

Gopeshwar
P Gupta

President

Alok Balahedi

Vice President

Rajkumar Jhalani

Treasurer

Vijay K Rawat

Joint Secretary

Satish
Chand Gupta

Secretary

Member

Deepak
Thakuriya

Naresh Gupta

Shrikrishna
Khandelwal

Prabhudayal
Khandelwal

Vinod Patodiya

Shri Khandelwal Vaishy Jatiya Ram Mandir Samiti

Jugal Kishore
Dhamani

Vice President

Mohan Balahedi

Secretary

Member

Brijmohan
Bajargaan

Damodar Rawat

Harishankar
Koolwal

Pramod
Gupta

Rajesh Dusad

Shankarlal
Khunteta

MANAGEMENT COMMITTEES

Shri Khandelwal Vaishy Jatiya Ganga Mandir Samiti

Anant
B. Tambi

President

Suresh
Kedawat

Vice President

Rajesh
K Rawat

Treasurer

Rameshwar
P Gupta

Joint Secretary

Satyanarayan
Koolwal

Secretary

Giriraj
P. Pitliya

Legal Secretary

Jagdish
P. Koolwal

HR Secretary

Gangasharan
Koolwal

**Finance
Secretary**

Nandkishore
Choudhary

**Cultural
Secretary**

Harimohan
Koolwal

**Construction
Secretary**

Vishnu Rawat

**Health
Secretary**

Kailash Busar

**Security
Secretary**

Satyanarayan
Khatori

Member

Rameshwar
Koolwal

Member

Contact Us



Paricharika Bhawan, Ganga Mata
Temple, Station Road, Jaipur-302 006



+91-9829064642, 9414046876



info@kvhs.in



WWW.kvhs.in